UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186802
UNIVERSAL
LIBRARY

# महात्मा गांधी के बलिदान

से

# सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका निदान जिसने आख़ीर में गान्धी जी तक को हमारे बीच में न रहने दिया।

लेखक

**सुन्दरलाल**

For Favour of Review

दाम बारह आना

सिक्रेटरी
हिंदुस्तानी कलचर सोसाइटी,
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

अक्तूबर, १९५१
दूसरी बार, ४०००

नया हिन्द प्रेस,
१४५, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# दो शब्द

राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी के अमर बलिदान से सबसे बड़ा फ़ायदा हमारे मुल्क और क़ौम को यह हुआ है कि साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की ओर आंखें मूंद कर तेज़ी से दौड़ते हुए लोगों को रुक कर थोड़ा सा सोचने और विचारने का मौक़ा मिला. फ़िरक़ापरस्ती के नशे में हम इतने चूर हो गये थे कि अपने नफ़े और नुक़सान का भी हमें कुछ ख़याल न रहा था. पंजाब में हुई बरबादी से अभी हमारी आँखें नहीं खुली. आख़िर में हमने गांधी जी सरीखे महा पुरुश को भी उसका शिकार बना डाला और अपने ही हाथो अपने राष्ट्र पिता की शर्मनाक और दर्दनाक हत्या कर डाली. फ़िरक़ापरस्ती के हमारे इस घोर पाप पर सारी दुनिया कांप उठी. हर चीज़ के दो पहलू होते हैं. महात्मा गांधी के इस क़त्ल को अमर बलिदान मान कर यदि हम उससे कुछ सबक़ ले सकें, तो यह शर्मनाक और दर्दनाक वाक़या मुल्क और क़ौम के लिये एक बड़ी सीख बन सकता है.

साम्प्रदायिकता क्षय की सी बीमारी है, जो छूत की बीमारी की तरह फैलती और अन्दर ही अन्दर नुक़सान पहुँचाती चली जाती है. इस किताब में बहुत थोड़े में इस बीमारी के होने के कारन बताते हुए उसके इलाज भी बताए गए हैं. अंगरेज़ों ने अपनी जिन कूट चालों से इस बीमारी को पैदा किया और उसको चारों ओर फैलाया उनका नक़शा खींचते हुए यह भी बताया गया है कि किस तरह अपने धर्म व मज़हब के असली रूप को भुला कर हम तंगदिली के शिकार हुए और उसका सहारा पाकर किस तरह यह बीमारी बढ़ती और फैलती चली गई. हमारे इतिहास को बिगाड़ कर, जान बूझ कर जो ग़लतफ़हमियां पैदा की गई हैं उन पर भी इसमें काफ़ी रोशनी डाली गई है.

पं० सुन्दरलाल जी इतिहास के माने हुए विद्वान हैं. उनकी मशहूर किताब "भारत में अंगरेज़ी राज" अपने ढंग की एक ही किताब है. आपने मज़हबी किताबों को भी ख़ूब गहरी नज़र से पढ़ा है. आपकी किताब "गीता और क़ुरान" भी अपने ढंग की बेमिसाल है. हिन्दी, उर्दू में कई

बार हज़ारों की तादाद में छप चुकी है. "कर्मयोगी" और "भविष्य" जैसे कभी इनक़लाब का सन्देशा लेकर प्रकट हुआ करते थे वैसे ही आपका "नया हिन्द" हर मास प्रकट होता है. सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको आखिरी चार महीनों में गान्धी जी के बिलकुल नज़दीक में रहने और बहुत पास से उनको समझने का मौक़ा मिला था. इसी बीच में आपको पूर्वी और पच्छिमी पंजाब का हज़ारों मील दौरा करके वहां के मसले की जानकारी हासिल करने का भी मौक़ा मिला था. इसलिये इस किताब में जो कुछ भी लिखा गया है उसकी क़ीमत बहुत बढ़ जाती है और पढ़ने वालों के लिये वह बहुत काम दे सकती है.

हमारी यह इच्छा है कि यह किताब हर हिन्दुस्तानी के हाथ में और घर में पहुंचे. महात्मा गान्धी के मिशन को पूरा करने की कोशिश में कुछ हाथ बटाने के विचार से ही हम इस किताब की हज़ारों कापियां छापना चाहते हैं. हमारी यह कोशिश उन लोगों के सहारे ही कामयाब हो सकती है जो अपने मुल्क और क़ौम को इस बीमारी से बचाकर तरक़्क़ी पसन्द क़ौमों और मुल्कों की पंगत में बिठाने की इच्छा रखते हैं. हमें पूरा यक़ीन है कि ऐसे भाई बहन इस किताब को चारों ओर फैलाने में हमारा हाथ बटावेंगे.

४० ए, हनुमान रोड,
नई दिल्ली

—सत्यदेव विद्यालङ्कार

## दूसरी बार

'महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़' एक ऐसा सबक़ है जिसकी ज़रूरत हमेशा बनी रहेगी, यह सबक़ अमर है और कभी ऐसा वक़्त नहीं आएगा जब इससे फ़ायदा न उठाया जा सके.

पहली बार यह किताब छः हज़ार छपी थी और अब हम इसे दो बारह छाप रहे हैं इससे मालूम होता है कि लोग इस किताब को शौक़ से पढ़ते हैं और जब ऐसी बात है तो यह हो ही नहीं सकता कि इससे कुछ फ़ायदा न उठाते हों.

—प्रकाशक

# महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

एक हिन्दू नौजवान के हाथ से देश के सब से बड़े नेता और अपने समय की दुनिया के सब से बड़े महापुरुष महात्मा गांधी का मारा जाना इतिहास की कोई मामूली घटना नहीं है. बहुतों की निगाह में हज़रत ईसा की सूली के बाद यह अपने ढंग की पहली घटना है इस तरह की घटनाओं का मुल्क और दुनिया की क़िस्मत पर गहरा असर पड़ता है और उस से लोगों के विचार, उनके काम और उनकी आगे की ज़िन्दगी कहीं की कहीं पलटा खा जाती है. यह भी एक क़ुदरती बात है कि ऐसे दिनों में लोगों के दिल और दिमाग़ अलग अलग तरफ़ को जा रहे हों और लाखों को ठीक राह न सूझती हो. ऐसी हालत में हमें शान्ति के साथ अपने चारों तरफ़ देखना, एक दूसरे को समझना और फिर ठण्डे दिल से देश, धर्म और इन्सानी क़ौम की तरफ़ अपने फ़र्ज़ का फ़ैसला करना चाहिये.

जिस नौजवान लड़के ने महात्मा गांधी की छाती पर पिस्तौल दाग़ा, उसकी जानकारी और समझ को हम ग़लत कह सकते हैं, उस पर तरस खा सकते हैं, पर उसकी नियत पर शक नहीं कर सकते. जिस बात को वह अपना फ़र्ज़ समझता था उसके लिये उसने अपनी जान को ख़तरे में डाल दिया. हमें अगर देश को बचाना है तो एक दूसरे को प्रेम के साथ और ठीक ठीक समझने की कोशिश करना होगी और सबकी भूलों, ग़लतियों और कमज़ोरियों को देश की भूलें, ग़लतियाँ और कमज़ोरियां मानकर चलना होगा.

अभी तक हज़ारों हिन्दू भाइयों के दिमाग़ इस तरह सोच रहे हैं—"इसलाम में उदारता या रवादारी नहीं है. दूसरे धर्मों की बरदाश्त नहीं है. क़ुरान में दूसरे धर्मों के मानने वालों को और ख़ासकर काफ़िरों को मार डालना जायज़ ठहराया गया है. दुनिया के और हमारे देश के हज़ार बारह सौ बरस के इतिहास में यही कुछ मुसलमानों का चाल चलन और रवैया रहा है. अंगरेज़ों के आने के बाद से भी मुसलमानों ने विदेशियों के साथ मिलकर देश के साथ दग़ा की, इसकी सबसे हाल की मिसाल मुस्लिम लीग और मिस्टर जिन्ना की कारगुज़ारियाँ हैं. म्युनिसिपैलिटियों में अलग अलग चुनाव से बढ़ते बढ़ते देश के टुकड़े तक हो गए, जिससे करोड़ों जनता बरबाद हुई. इस सब के होते हुए भी कांग्रेस और महात्मा गांधी हमेशा मुसलमानों की तरफ़दारी करते रहे, उनकी हर मांग को हिन्दुओं से मनवाते रहे, उधर ज्यूं ज्यूं मनमांगी मिलती रही, मांगें बढ़ती गईं. हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को इसलाम और मुसलमानों से ज़बरदस्त धक्का पहुँचा है. ऐसी सूरत में अगर हमें अपने देश, धर्म और संस्कृति को मिटा नहीं डालना है तो हिन्दू हिन्दू को एक करके मज़बूत किया जावे और मुसलमानों को क़ाबू में रखा जावे या हिन्दू बना लिया जावे या निकाल दिया जावे. पाकिस्तान, जिसके बनाने की ज़िम्मेवारी भी कांग्रेस और महात्मा गांधी पर है, इस बँटवारे के बाद हिन्दुओं को पूरा हक़ है कि हिन्दुस्तान

को शुद्ध हिन्दू-राज बनावें, हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को इसमें उजागर करें, मुसलमान जो रहना चाहें दब कर रहें, नहीं तो पाकिस्तान चले जावें"

इस सारे काम के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट थे महात्मा गांधी, उनकी मिली जुली प्रार्थना, उनका मुसलमानों से प्रेम और उनकी हिन्दुओं के अलग फ़ौजी संगठन से मुखालफ़त. ऐसी हालत में महात्मा गांधी को राह का सबसे बड़ा रोड़ा समझकर देश के सामने से हटा देना इस तरह सोचने वाले का पाक फ़र्ज़ हो जाता है.

इस तरह के और इससे मिलते जुलते विचार अब भी हज़ारों देशवासियों के दिलों में मौजूद हैं. यही वजह है कि महात्मा गांधी के लिये दिलों में आदर होते हुए भी हज़ारों हिन्दू ऐसे हैं जिन्हें गांधी जी की मौत से जितना गहरा दुख होना चाहिये था, उतना नहीं हुआ. उस समय कहीं कहीं से मिठाइयां बँटने की भी ख़बरें आई थीं. इस छोटी सी पुस्तक में हम इस तरह के विचारों और उनके ख़िलाफ़ विचारों दोनों की सचाई को कसौटी पर कस कर देख लेना चाहते हैं. हो सकता है कि हम इस सवाल के हर पहलू पर पूरी रोशनी न डाल सकें. हम पढ़ने वालों को सिर्फ़ देश के इस संकट की हालत में सोचने की दिशा बता देना चाहते हैं.

इस सारे सवाल के तीन पहलू हो सकते हैं:—

( १ ) राजकाजी पहलू, जिसका देश की इस वक़्त की हालत से सबसे ज़्यादा वास्ता है. इस में हमें इस समय की दुनिया की राजकाजी हालत के साथ साथ अपने देश के पिछले दो सौ बरस के राजकाजी जीवन पर एक निगाह डालनी होगी.

( २ ) धार्मिक पहलू, जिसमें समाजी और कलचरल पहलू भी शामिल हैं. इस में हमें देखना होगा कि धर्म है क्या चीज़, हिन्दू धर्म क्या है, इसलाम क्या है, सिख धर्म क्या है, कलचर या संस्कृति क्या चीज़ है वग़ैरा.

( ३ ) इतिहासी पहलू, जिसने ख़ासकर हमारे स्कूलों और कालेजों के ज़रिये हम पर गहरा असर डाला है. इस में हमें अपने देश के पिछले ख़ास कर मुसलमानी राज के ज़माने के इतिहास पर एक नज़र डालनी होगी.

हम इन में से एक एक पहलू को लेकर उस पर अलग अलग विचार करना चाहते हैं.

: १ :

# राजकाजी पहलू

राजकाज आज हमारी सब बातों पर सबसे ज़ियादा छाया हुआ है. हर चीज़ को दुनिया राजकाज की ही ऐनक में देखती है. इसलिये पहले हम अपनी हालत के इस पहलू पर ही ध्यान दें. हमें इसे ठीक ठीक समझने के लिये कम से कम पौने दो सौ बरस पीछे जाना होगा.

## अंगरेज़ों की चालें

अंगरेज़ी राज की बुनियादें प्लासी की लड़ाई में रखी गईं. १८ वीं सदी का दूसरा अद्धा शुरू हो चुका था. उस वक़्त के बंगाल और बिहार में इतिहास के पढ़ने वालों को यह एक ख़ास बात देखने को मिलती है कि विदेशी अंगरेज़ व्योपारी मुल्क के हिन्दू रईसों और सौदागरों से मिलकर यहाँ के मुसलिम राज को उखाड़ने के हथकंडे खेल रहे थे. इसी लिये बाद के अंगरेज़ इतिहासकार सिराजुद्दौला को आसानी से खूब काला रंग कर दुनिया के

सामने रख सके. उस ज़माने की हमारी स्कूली किताबों में भी सिराजुद्दौला को इन्हीं रंगों में दिखाया गया. सवा सौ बरस से ऊपर बीत जाने के बाद श्री अक्खे कुमारदत्त ने मेहनत और खोज करके अपनी अनमोल किताब में सिराजुद्दौला के ऊपर उन सब कलंकों को झूटा साबित किया. यहाँ तक कि जिस काल कोठरी की बाबत दुनिया भर को बताया जाता था कि सिराजुद्दौला ने अपने देशी और विदेशी दुश्मनों को सज़ा देने के लिये बना रक्खी थी, वह मालूम हुआ कि अंगरेज़ों ने सिराजुद्दौला की रिआया और उसके आदमियों को सज़ा देने के लिये बनाई थी. सिराजुद्दौला हिन्दू या मुसलमान हर बंगाली की निगाह में और दुनिया की निगाह में एक आदर्श देशभक्त, बहुत ही पाक, ऊँचे चलन का और आज़ादी का सच्चा दिलदादा बनकर चमकने लगा.

अगले सौ बरस के अन्दर यानी सन् १८५७ की आज़ादी की जंग तक लगातार हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से, मरहठों को राजपूतों से और राजपूतों को मरहठों से, निज़ाम को पेशवा से और पेशवा को टीपू सुलतान से लड़ाया जाता रहा. तफ़सील में जाने की यहाँ जगह नहीं है. एक एक कर मुल्क के टुकड़े ग़ैरों के क़ब्ज़े में आते गए. देसी राजे और प्रजा दोनों पंगु होते चले गये.

नाना फड़नवीस, हैदरअली और दिल्ली के कुछ दरबारियों को सूझा कि मुल्क मिटता जा रहा है. मेल की कोशिशें होने लगीं. पर मालूम होता है कि फूट और देश-दग़ा की जड़ें ज़ियादा मज़बूत थीं. अठारवीं सदी के आख़िर में निज़ाम और मरहठों दोनों ने अंगरेज़ों के साथ मिलकर टीपू सुलतान की आज़ादी की आख़िरी कोशिशों को नाकाम कर दिया. होते होते १९ वीं सदी का बीच आया. हिन्दू और मुसलमानों को एक तरफ़ और मरहठों और राजपूतों को दूसरी तरफ़ एक दूसरे से लड़ाये रखने की कोशिशें बराबर जारी रहीं. गवर्नर जनरल लार्ड अलेनब्रू ने कहा कि—"मुसलमान क़ौम हमारी क़ुदरती दुश्मन है, इसलिये हमें हिन्दुओं को

मुसलमानों के खिलाफ़ करने और अपनी तरफ़ मिलाने की पूरी करनी चाहिये." देशभक्तों की मेल और आज़ादी की कोशिशें भी जारी रहा. सन् ५७ का दिन आया. लाखों हिन्दू और मुसलमानों ने सम्राट् बहादुरशाह, नाना धोंडूपन्त और रानी लक्ष्मी बाई के झन्डे के नीचे मिलकर एक बार मुल्क को आज़ाद करने की जी तोड़ कोशिश की. आज़ादी एक बार हमारे दांये बांये मंडरा रही थी. अंगरेज़ों की फूट डालने की चाल फिर उनका साथ दे गई. ऐन वक़्त पर सिखों और गोरखों की देशद्रोह ने फिर मुल्क के बढ़े हुए हाथों को कुचल दिया और हमारे दिलों को पस्त और बेड़ियों को और मज़बूत कर दिया. इसके बाद भी लगभग २५ साल तक हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को दबाया जाता रहा. खास दिल्ली के हिन्दू मुसलमानों को एक दूसरे से फाड़ने के लिये दिल्ली की जामे मस्जिद और सुनहरी मस्जिद दोनों ढाई ढाई सौ रुपये में हिन्दू रईसों के हाथ नीलाम की गईं. लार्ड राबर्टस के हुकुम से दिल्ली में और उसके आस पास सब "खूबसूरत और जवान मुसलमानों" को चुन चुन कर तलवार के घाट उतारा गया. हज़ारों को अजीब अजीब घिनावने तरीक़ों से फांसियाँ दी गईं. इन फांसियों का दौर, जिनमें हज़ारों बेगुनाह काम आये, लगभग सारे उत्तर हिन्दुस्तान में सन् १८८० तक जारी रहा.

इस बीच में हिन्दुओं की ताक़त बढ़ चली थी. वह तालीम में बढ़ गए थे. सरकार दरबार में भी वह आगे आगे थे. उनमें फिर कुछ उमंगें जागीं, जहाँ तहाँ आज़ादी की तहरीक फिर शुरू हुई. इन तहरीकों का रुख़ बदल देने के लिये अंगरेज़ों को नेशनल कांगरेस बनाने की ज़रूरत पड़ी. कांगरेस को अभी २१ बरस ही हुए थे कि उसके भी ज़ोर को तोड़ने के लिये बंगाल के टुकड़े करने और राजधानी को कलकत्ते से दिल्ली लाने की ज़रूरत पड़ी. पलड़ा पलटा, उसी ज़माने के क़रीब से मुसलमानों को हिन्दुओं और खास कर कांगरेस के खिलाफ़ बढ़ावा दिया जाने लगा. पर अब सवाल हिन्दू मुसलमानों का ही नहीं था. हालत बदल चुकी थी. अब सवाल था दूर की निगाह वाले आज़ादी के मतवालों और तंगनिगाह वाले

छोटे छोटे टुकड़ों पर टूटने वालों का. कांगरेस में कम या ज़ियादा दोनों शामिल थे. इसलिये कांगरेस के असर को काटने के लिये सन् १९०६ में ढाका में मुसलिम लीग और लाहौर में हिन्दू महासभा दोनों की नींव साथ साथ रक्खी गई. तब से अब तक की हमारी राजकाजी मुसीबतें इन्हीं तीनों की तिगड्डम और खेंचातानी का नतीजा हैं. सन् १९२१ ने फिर एक बार वह दिन दिखाया जब हिन्दू मुसलमान एक दूसरे की दांत काटी रोटी खाते देखे जाते थे. अंगरेज़ हाकिमों ने महसूस कर लिया कि महात्मा गांधी का प्रोग्राम "कामयाबी से केवल एक इन्च दूर रह गया था." तब फ़ौरन एक तरफ़ शुद्धि और संगठन और दूसरी तरफ़ तंज़ीम और तबलीग़ के बाज़ार गरम किये गये. करोड़ों रुपया इन ज़हरीली तहरीकों में खर्च हुआ. जगह जगह हिन्दू मुसलमान दंगे होने लगे और बढ़ते गए. सम्भला-सम्भलाया शीराज़ा फिर बिखरने लगा. देश को सम्भालने की कोशिशें भी जारी रहीं, यहाँ तक कि हम दूसरे महायुद्ध के खातमे तक पहुँच गए. यह है हमारी लगभग दो सौ बरस की गिरावट और उसके कारनों पर एक सरसरी निगाह.

## १९४५ के बाद

हम अब १९४५ तक आ पहुँचे. दूसरा महायुद्ध ज्यों त्यों कर खत्म हुआ. इसके बाद के हालात को अब ज़रा और तफ़सील से समझने की ज़रूरत है. महा युद्ध के बाद अंगरेज़ सरकार के सामने हालत यह थी:—

दूसरे महायुद्ध से दुनिया की गुत्थियाँ सुलझी नहीं थीं. कुछ नई उलझनें भी पैदा हो गई थीं. पाँच मोटी बातें अंगरेज़ क़ौम के सामने साफ़ चमक रही थीं.

पहली यह कि तीसरा महायुद्ध होनहार दिखाई दे रहा था. अब भी उसका डर गया नहीं है. वह टलता जा रहा है तो टलने के भी साफ़ सबब हैं.

दूसरी यह कि पिछली दोनों बड़ी जंगों में हिन्दुस्तान की जनता की हमदर्दी जर्मनी हो या जापान, इंगलिस्तान के दुश्मनों के साथ थी. यह बात अच्छी रही हो या बुरी, उसकी सचाई से कोई इन्कार नहीं कर सकता.

तीसरी यह कि हर महायुद्ध से हिन्दुस्तानियों में आज़ादी की प्यास और ज़ियादा भड़कती रही, और आज़ादी हासिल करने के लिये कोशिशें भी होती रहीं.

चौथी यह कि दूसरे महायुद्ध के आखीर के दिनों में खासकर सुभाश बाबू और आज़ाद हिन्द फ़ौज की बदौलत हिन्दुस्तानी फ़ौज के अन्दर हिन्दू मुसलमान, सिख और सब धर्मों के बीच वह एका, प्रेम और सब में मुल्क की आज़ादी के लिये वह लगन दिखाई देती थी जो सन १८५७ के बाद से अब तक और कभी दिखाई नहीं दी थी. दिल्लीमें शाहनवाज़, सहगल और ढिल्लन का मुक़दमा, उस मुक़दमे के दौरान में अंगरेज़ कमाण्डर-इन-चीफ़ का यह कह देना कि अगर शाहनवाज़ और उसके साथियों को सज़ा दे दी गई तो हिन्दुस्तानी फ़ौज मेरे हाथ से निकल जायगी, और बम्बई में समुन्द्री सेना के सिपाहियों की बग़ावत, सब हिन्दुस्तानी फ़ौज के अन्दर आज़ादी की उस लगन और उस अनोखे एके की अलामतें थीं.

पाँचवीं बात थी अगले महायुद्ध के लिये तैयारी. यही वजह थी कि जगह जगह खाने की चीज़ों, कपड़ों, वग़ैरा के बड़े बड़े स्टाक जमा किये जा रहे थे और उन को बराबर ताज़ा किया जा रहा था. यही जड़ थी दुनिया भर में कण्ट्रोल, राशनिंग और दुनिया के ब्योपार को अपने हाथों में लेने की. अंगरेज़ सरकार जानती थी कि अगर यह सब करना पड़ा, और करना पड़ेगा, तो रोटी के नाम पर शहर शहर और गाँव गाँव की जनता सरकार के खिलाफ़ खड़ी हो जावेगी जगह जगह इसी राशनिंग और कण्ट्रोल के खिलाफ़ हिन्दू और मुसलमान, यहाँ तक कि कांगरेस और मुसलिम लीग के मिले जुले जलसे भी हुए थे.

इन पांच बातों में हमने जनता की बढ़ती हुई ताक़त को नहीं गिना. अंगरेज़ सरकार इसे भी देख रही थी. इस के लिये हम ज़रा और पीछे हट

कर देखें. पहले महायुद्ध ने भारती जनता की उम्मीदों को जगाया. होम रूल लीग क़ायम हुई उसका आन्दोलन बढ़ा. पंजाब में लाखों सिपाही योरोप के मैदानों को देख कर लौटे थे. उनकी बदौलत वहाँ एक नया और अनोखा जोश दिखाई दिया. उसे दबाने के लिये जलियानवाला में जो हत्याकांड हुआ उससे देश भर में बेचैनी और बढ़ी. सन् १६२१ ने वह रंग दिखलाया जिसका ऊपर ज़िक्र आ चुका है. सन ३० और सन ४२ में से हर तहरीक ने हमें पिछली तहरीक से काफ़ी आगे पहुँचा दिया. यहाँ तक कि सन ४२ की कांगरेस की तहरीक और जापानी युद्ध की हालत ने एक बार हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज को गहरे संकट में डाल दिया. अंगरेज़ क़ौम खूब समझ गई कि इन हालतों में अगर अचानक रूस के साथ जंग छिड़ गई और ऐन मौक़े पर फिर कोई आन्दोलन खड़ा होगया तो इस देश में अंगरेज़ी राज को सम्भाल रखना नामुमकिन हो जायगा.

अंगरेज़ क़ौम के समझदार राजकाजियों ने देख लिया कि बिना हिन्दुस्तानियों के हाथों में अधिकार सौंपे, उन्हें आज़ादी दिये, राज का भार उन पर डाले अपना असली मतलब पूरा न कर सकें गे. और कोई रास्ता अंगरेज़ क़ौम के लिये था ही नहीं. इतने गहरे असन्तोश में डूबे हुए और इस तरह की क़ुरबानी का रास्ता सीखे हुए लोगों पर बहुत दिनों राज कर सकना नामुमकिन था. कांगरेस के नेताओं को जेलों से निकाल कर बातचीत के लिये बुलाया गया. मुसलिम लीग के लीडरों को भी जमा किया गया. कहा गया कि आपस में समझौता करलो और आज़ादी ले लो. कुछ को शक हुआ कि जो आज़ादी हज़ारों को कटवाने से भी न मिल सकी वह अब इतने सस्ते दामों में क्यों दी जा रही है? पर मुल्क के नेताओं ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाना ही ठीक समझा. तरह तरह से यह कोशिश की गई कि लीग और कांगरेस या हिन्दू और मुसलमान अन्दर से मिलने न पावें और जातों और फ़िरक़ों की दीवारें भी और मज़बूत हो जावें. मुल्क का दो टुकड़ों में बँटवारा तय था. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बँटवारे के जवाब में पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े करने की मांग भी सामने आई. पहली

चीज़ तो बुरी थी ही, दूसरी उससे भी बुरी साबित हुई. बाउन्डरी कमीशनों का बैठना लाज़िमी हो गया. इन कमीशनों के साथ साथ दोनों तरफ़ बाउन्डरी फ़ौजें रक्खी गईं. इसके बाद दोनों तरफ़ के इलाक़ों को एक एक मज़हब वालों से ख़ाली करने की कोशिश की गई, इस कोशिश में फ़िरक़ेवाराना आग भड़की. केवल पंजाब के अन्दर क़रीब दो लाख हिन्दू सिख और तीन लाख मुसलमान क़त्ल हुए और लगभग एक करोड़ अपने घरों से निकाल कर सैकड़ों मील दूर फेंक दिये गए. अरबों के माल का नुक़सान हुआ. नफ़रत, .ग़ुस्से और बदले के जज़्बों ने सारी हिन्दुस्तानी क़ौम को अनहोने पापों और अनसुनी बरबादी के समन्दर में गोते खिलाये. जिस किसी ने ज़रा भी ध्यान के साथ और ठंडे दिल से उन दिनों पंजाब की हालत को देखा है उसे मालूम है कि यह सारा तूफ़ान अचानक ही नहीं आ गया था. यह सब खेल सोच समझ कर तरकीब के साथ खेला गया था. पच्छिमी पंजाब के गवर्नर मुडी और सरहद के गवर्नर कनिंघम, ऐसे ही दरजनों सिविल और मिलिटरी अंगरेज़ अफ़सरों और बाउन्डरी फ़ौजों के अंगरेज़ों ने जिस तरह इस आग को सुलगाया, भड़काया और अनेक जगह कोशिश के साथ बुझने से रोका, इन सब चीज़ों की लम्बी और दर्दनाक कहानी लिखे जाने का शायद यह समय नहीं है.

हम नहीं कह सकते कि इंगलैण्ड की सरकार या उसके सब मेम्बर इस साज़िश में शामिल थे. हो सकता है कि उनकी नियत बहैसियत सरकार के यह न रही हो. हो सकता है कि वह हिन्दुस्तान में कई हकूमतें क़ायम करके हकूमत हकूमत की हैसियत से उनसे सुलहनामे करके ही दुनिया में अपने राजकाजी दल को मज़बूत और अपने तिजारती नफ़े को पक्का कर लेना चाह रहे हों. पर जिस किसी ने इस सम्बन्ध की रिपोर्टों और इंगलिस्तान की पार्लियामेन्ट की बहसों को ध्यान से पढ़ा है, उसे मालूम है कि १९४७ के अन्दर देश में जो कुछ हुआ उसकी झलकें इंगलिस्तान के राजकाजी नेताओं के बयानों और तक़रीरों में पहले से साफ़ दिखाई दे गई थीं. इसमें कोई भी शक नहीं कि मि० चर्चिल और उनके साथी उधर और छोटे बड़े अनेक

अंगरेज़ अफ़सर इधर इस खेल को बड़ी होशियारी के साथ खेल रहे थे. हमारी सदियों की कमज़ोरियों, आपसी नफ़रतों, फूट, धर्म मज़हब के बारे में कुएँ के मेढक की तरह तंग निगाहें, जात पात, नातजरबेकारी, ख़ुदग़रज़ी और अन्धेपन से वह अच्छी तरह वाक़िफ़ थे. इन सबसे उन्हें पूरी मदद मिली और अभी तक मिल रही है.

## अंगरेज़ों की चालों का नतीजा

नतीजा दिखाई दे गया. हिन्दुओं और मुसलमानों के दिल इस तरह फटे जिस तरह पिछले बारह सौ बरस में कभी न फटे थे. सिख और जाट, ब्राह्मन और अब्राह्मन, चितपावन और ग़ैरचितपावन भावनाएँ ज़ोर के साथ जाग उठीं. मुसलिम राज, हिन्दू राज, जाटराज, सिख राज और मरहठा राज क़ायम करने के लिये तरह तरह की फ़ौजें तक तैयार हो गईं. देश को इस अनसुनी दुर्गति को देखकर बहुतों के मुंह से निकलने लगा—"इससे तो अंगरेज़ी राज अच्छा था." भारत सरकार को अपना और पाकिस्तान का झगड़ा उस यू० एन० ओ० के सामने रखना पड़ा जिसमें अंगरेज़ों और उनके साथी अमरीका वालों की ही तूती बोलती है.

बहुत से नासमझ भाई हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच लड़ाई की बात हलकी तबियत से कर बैठते हैं. वह भूल जाते हैं कि आज कल की जंग आबादी के आंकड़ों से तय नहीं होती. पिछले दोनों महायुद्धों में तीन तीन चार चार करोड़ की क़ौमों ने दस दस बीस बीस करोड़ की क़ौमों को आसानी से पटक दिया. बीसवीं-सदी की लड़ाई ज़मीन पर चलने वाले टिड्डी दलों की लड़ाई नहीं होती. वह हवा में उड़ने वाले हवाई जहाज़ों, भारी भारी बम के गोलों, नए नए हथियारों, टैंकों, गैसों और साइन्स के शगूफ़ों की लड़ाई है. जिसके पास इस तरह का सामान ज़ियादा और बढ़िया होगा वही जीतेगा. यह सब सामान अभी तक हिन्दुस्तान में नहीं बनता और न दस बीस बरस अधिक बनने की उम्मीद हो सकती है. अगर देश की दोनों सरकारों में लड़ाई की आग भड़की, तो दोनों को इस तरह का सामान, एक से एक बढ़कर, करोड़ों का नहीं कम से कम अरबों

का पच्छिमी मुल्कों से ख़रीदना पड़ेगा, जिनका माली और तिजारती ढांचा अभी तक बदला नहीं है और जिन्हें दूसरे बड़े बड़े मुल्कों को किसी तरह अपने चंगुल में फांस कर चूसने की उसी तरह ज़रूरत है, जिस तरह पहले थी. इंगलिस्तान की तिजारती, माली और राजकाजी ज़रूरतें आज भी वैसी ही हैं जैसी सन् १९४२ में थीं, जब कि इंगलिस्तान ने पूरी बेदर्दी के साथ हिन्दुस्तान की आज़ादी की मांग को कुचला था. हमारी तीन दिन की कच्ची आज़ादी फिर पीढ़ियों के लिये उसके पास गिरवी रक्खी हुई होगी, जिससे हम यह अरबों का क़र्ज़ा लेंगे. भारत और पाकिस्तान दोनों की सरकारें ग़ैरों के बूते पर लड़ लड़कर चीथड़े चीथड़े हो जायंगी. सारा मुल्क बरबाद होगा, नफ़रतें बढ़ेंगी और अन्दर के छोटे मोटे इन्तज़ाम को छोड़कर मुल्क की फ़ौजी, तिजारती और राजकाजी बाग इंगलैन्ड या अमरीका के हाथों में होगी.

पिछले पांच छै बरस के इंगलिस्तान और अमरीका के राजकाजियों के बयानों और उनकी तक़रीरों से साफ़ दिखाई देता है कि इंगलिस्तान और अमरीका के बहुत से बड़े बड़े लोग उसी दिन की बाट जोह रहे हैं. वह इन्तज़ार में हैं कि हम इस नई आज़ादी के नाक़ाबिल साबित हों. हम आपस में लड़ लड़ कर कमज़ोर हों और नए सिरे से अपना तिजारती, कारबारी और फ़ौजी पंजा हम पर एक अरसे के लिये कस लें.

## ऐंगलो-अमरीकन गुट

सन ४७ के शुरू में इंगलिस्तान की सरकार ने अमरीका की सरकार से जो क़रीब १६ अरब रुपये का क़र्ज़ा लिया था, उसकी शर्तें ऐंगलो अमरीकन दल की नीयत को साफ़ उजागर कर रही हैं. क़र्ज़ की कुछ शर्तें गुप्त रखी गई थीं. जो शर्तें निकल चुकी हैं उनमें से कुछ सीधे सादे शब्दों में यह हैं—

"दुनिया के सब छोटे बड़े मुल्क दो हिस्सों में बंटे हुए समझे जावेंगे, एक इंगलैन्ड और अमरीका के दोस्त और दूसरे इंगलैन्ड और अमरीका के दुश्मन."

इंगलैन्ड और अमरीका के दोस्त मुल्कों के साथ नीचे लिखी शर्तें होंगी—

( १ ) "अगर किसी दोस्त मुल्क में कोई ऐसा कच्चा माल पैदा हो सकता है जिसकी इंगलैन्ड या अमरीका को अपने कारखानों के लिये ज़रूरत हो तो उस दोस्त मुल्क का फ़र्ज़ होगा कि वह माल ठीक मिक़दार में पैदा करके इंगलैन्ड या अमरीका को दे."

( २ ) "हर दोस्त मुल्क का फ़र्ज़ होगा कि इंगलैन्ड और अमरीका के कारख़ानों के बने हुए माल के लिये अपने यहाँ की मंडियों को खुला और महफ़ूज़ रखे."

( ३ ) "इंगलैन्ड और अमरीका का फ़र्ज़ होगा कि हर दोस्त मुल्क को तिजारती कारबारी तरक़्क़ी के लिये रुपये से और जानकार आदमियों से मदद दें."

( ४ ) "हर दोस्त मुल्क का फ़र्ज़ होगा कि अपने यहाँ कोई ऐसा नया कारखाना या धन्दा न खुलने दे जिससे इंगलिस्तान या अमरीका के किसी कारखाने या धन्दे को नुक़सान पहुँचने का डर हो."

( ५ ) "अगर किसी दोस्त मुल्क में कोई ऐसा नया राजकाजी या समाजी आन्दोलन खड़ा हो जावे जिससे वहां के कच्चे माल के निकालने, में या वहाँ की मंडियों की हिफ़ाज़त में रुकावट पड़ने का डर हो तो इंगलैन्ड और अमरीका को हक़ होगा कि अपनी फ़ौजें भेजकर उस आन्दोलन को दबावे."

साफ़ ज़ाहिर है कि इंगलिस्तान और अमरीका के पूंजीपतियों की यह चाह, कि वह दुनिया के पिछड़े हुए मुल्कों को अपनी कारबारी लूट का शिकार बनाये रखें और इसीलिये उन पर अपना फ़ौजी दबदबा भी क़ायम रखें, मिटी नहीं है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की खानाजंगी ने अगर भयंकर रूप धारन किया तो हम पूरी तरह ऐंगलो-अमरीकन दल की गोद में जा पड़ेंगे. ऐसी हालत में अगर ऐंगलो-अमरीकन दल और रूस का

दल इन दोनों दलों में जंग छिड़ गई तो हमारी इच्छा के खिलाफ़ भी सारे हिन्दुस्तान के आदमी और यहाँ का पैसा और माल रूस के खिलाफ़ इस्तेमाल किया जावेगा.

हम इंगलैन्ड या अमरीका को अपना दुश्मन नहीं मानते. उन दोनों देशों की जनता के साथ हमें पूरी हमदर्दी है. रूस चीन और वहाँ की जनता के साथ भी हमें वैसी ही हमदर्दी है. हम न किसी को अपना दुश्मन समझते हैं और न किसी से लड़ना चाहते हैं. हम में अभी इतना दम भी कहाँ? हम सब के साथ सुलह से रहना चाहते हैं. अगर दुनिया की जंग हो तो हम अपने को इससे पूरी तरह अलग रखने की भरसक कोशिश करेंगे. लेकिन, अगर हमें किसी हालत में मजबूर होकर किसी एक दल का साथ देना ही पड़े तो हम अपने को इस बारे में पूरी तरह आज़ाद रखना चाहते हैं. इसी में हमारी सलामती है. हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि इस मौक़े पर हमारी अपनी ख़ानाजंगी और हमारी सब फ़िरक़ेवाराना संस्थाएं, चाहे वह हिन्दुओं की हों, सिखों की या मुसलमानों की, हमें ज़बरदस्ती एक ऐंग्लो-अमरीकन दल की गोद में फेंक रही हैं. हमारे मुल्क की नई आज़ादी के लिये इससे बढ़ कर नाश का ज़रिया नहीं हो सकता.

१४ फ़रवरी '४८ को मिस्र की राजधानी क़ाहिरा से यह ख़बर दुनिया भर में भेजी गई कि "दिसम्बर सन १६४७ में इंगलैन्ड और अमरीका की सरकारों के बीच गुप्त चिट्ठी-पत्री हुई है जिसकी ग़रज़ यह है कि यह दोनों सरकारें एशिया की क़ौमी आज़ादी की तहरीकों को मिलकर दबावें और उन मुल्कों में अपनी पूँजी लगावें और बढ़ावें" इस ख़बर के मुताबिक़ "अमरीका का कहना है कि अमरीका की राजकाजी और फ़ौजी मदद से इंगलैन्ड एशिया के मुल्कों में वहां की पिछड़ी हुई ताक़तों को बढ़ावा देना चाहता है और उनके ज़रिये अपने को वहां मज़बूत कर लेना चाहता है." इस पर क़ाहिरा के अख़बार "अलमिसरी" ने लिखा है कि—"अरब

लोगों को यक़ीन है कि इंगलेन्ड और अमरीका का यह पत्र व्यवहार दूसरे मुल्कों की आज़ादी के लिये सीधे और साफ़ ख़तरे की घंटी है."

५ फ़रवरी '४८ को मास्को से यह ख़बर आई थी कि रूस के अख़बार "मिलिटरी गज़ट" ने लिखा है कि "महात्मा गांधी का क़त्ल अंगरेज़ साम्राजवादियों ने कराया है, जो इससे हिन्दुस्तान में घरेलू जंग बढ़ाना और हिन्दुस्तान को अपनी हुकूमत ख़ुद चला सकने के नाक़ाबिल साबित करना चाहते हैं." इस रूसी अख़बार के लेखक "ज़ाविच" ने यह भी लिखा है कि "गांधी को इसलिये क़त्ल किया गया क्योंकि वह उस ख़ाना-जंगी को रोकने के लिये अपनी पूरी ताक़त लगा रहे थे जिसे अंगरेज़ों ने जान बूझ कर बढ़ाया है." उस लेख में यह भी लिखा है कि "गांधी जी की मौत ब्रिटिश साम्राजवादियों के लिये यह साबित करने को ज़रूरी थी कि हिन्दुस्तानी न आज़ादी के क़ाबिल हैं और न उसे निबाह सकते हैं. मुल्क में ख़ानाजंगी को और बढ़ाने के लिये ब्रिटिश साम्राजवादी इस से फ़ायदा उठाने की सोच रहे हैं" मुख़्तलिफ़ मुल्कों के तरक़्क़ी पसन्द अख़बार यह मान रहे हैं और उनके यह मानने के लिये काफ़ी वजह हैं कि क़ातिल के हाथ के पीछे अंगरेज़ों के ख़ुफ़िया आदमी ( ब्रिटिश इन्टेलिजेन्ट्स सर्विस ) थे.

इसका यह मतलब नहीं कि किसी भी फ़िरक़ेवाराना संस्था के सब लोग या महात्मा गांधी के क़त्ल की साज़िश में हिस्सा लेने वाले सब लोग जान बूझ कर ग़ैरों के हाथों में खेल रहे थे. इस तरह की चीज़ें जब बढ़ती हैं तो दोनों तरफ़ की ख़बरें और बदले की क़ुदरती भावनाएं, तरह तरह की ग़लत तालीम, ग़लत समझ, तंग निगाहों के सहारे पनप कर अपने आप इस तरह की संस्थाएं और साज़िशें पैदा कर देती हैं. इस तरह के विचारों और कामों के करने वाले, जाने या अनजाने मुल्क को दुश्मनों के हाथों में फेंक देते हैं. हमें यह भी मालूम है कि हिन्दुस्तान या पाकिस्तान को आज़ादी मिलने के बाद भी ब्रिटिश सरकार के और अमरीका के एजेन्ट बराबर इस देश में अपना काम कर रहे हैं.

हो सकता है कि हमारी दोनों सरकारें कोशिश करने पर भी इस आपसी लड़ाई की आफ़त से न बच सकें. पर आती हुई आफ़त को देख कर, उसके लिये तैयार रहते हुए भी जहाँ तक हो सके उसे टालना, बचने की कोशिश करना और आफ़त आ जाने पर भी उसके फैलाव, उसकी दौड़ और उसके बुरे असर को कम से कम हदों में रखना एक बात है और जान बूझ कर आफ़त को बुलाना और उसे पूरी तरह और उमंग के साथ अपने ऊपर ओढ़ लेना दूसरी बात.

यू० एन० ओ० जैसी पंचायतों से भी हम कोई ख़ास भले की उम्मीद नहीं कर सकते. जर्मन, जापान, दक्खिन अफ़रीक़ा, मिस्र, फ़िलस्तीन, चीन और कोरिया जैसे देशों के मामलों में यू० एन० ओ० का रुख़ हमारी आँखें खोल देने के लिये काफ़ी होना चाहिये.

## दोनों की बरबादी

जो लोग हिन्दुस्तान को रहे सहे मुसलमानों या ग़ैर हिन्दुओं से ख़ाली करने की बातें करते रहते हैं, वह भी दूसरी तरफ़ के ज़ुल्मों को सुन सुन कर और कुछ आप बीती की बिना पर ग़ुस्से और नफ़रत के असर में, मुल्क और ख़ुद हिन्दुओं के लिये अपने सुझाव के बरबादकुन नतीजों को नहीं देख पाते.

अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब दोनों में कई हज़ार मील का दौरा करके हमने दोनों की हालत को अच्छी तरह देखा. लहौर की क़रीब क़रीब सब तिजारत पहले हिन्दुओं के हाथों में थी. दस्तकारियाँ और धन्दे भी बहुत से उन्हीं के हाथों में थे. यह चीज़ें एक दूसरे में इतनी गुथी रहती हैं कि रहे सहे मुसलमान कारीगरों और व्योपारियों को हमने रोकर यह कहते देखा कि उनके अपने कारबार भी एक ग़ैर मालूम अरसे के लिये मटियामेट हो चुके. अमृतसर शहर की चुंगी की आमदनी साढ़े चार लाख सालाना से गिरकर लगभग २४ हज़ार सालाना रह गई थी. वहाँ के मुसलमान सौदागर और कारीगर तो मिट ही गए. क़रीब

क़रीब सब बड़े हिन्दू सौदागरों और कारीगरों ने भी अमृतसर छोड़ कर हमेशा के लिये दिल्ली या बम्बई में डेरे डाल दिये. हिन्दुओं और सिक्खों को निकाल कर पच्छिमी पंजाब, और मुसलमानों को निकाल कर पूरबी पंजाब, दोनों एक अरसे के लिये अधमरी हालत में पड़ गए और कम से कम बहुत दिनों तक कारबारी, तिजारती, माली या समाजी हैसियत से अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते. दोनों तरफ़ की सरकारों और सरकारी अफ़सरों से बातें करने के बाद हम इस दर्दनाक नतीजे पर पहुँचे हैं. चहार दीवारी के अन्दर का लाहौर और अमृतसर दोनों कम या ज़ियादा श्मशान दिखाई देते थे. और कोई यक़ीन के साथ नहीं कह सकता कि इन दोनों में से कोई कब अपनी पुरानी ख़ुशहाली को फिर से पा सकता है. तीस लाख अरबों और दूसरे मुसलमानों को अपने यहां से निकालने के बाद तीन सौ बरस तक स्पेन अपना सिर ऊंचा नहीं कर सका और उसके बाद आज तक स्पेन को दुनिया में वह रुतबा नहीं मिला जो इस ज़ुल्म से पहले उसे हासिल था.

पंजाब और उसके आस-पास के इलाक़े में लगभग एक करोड़ इन्सान एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह फेंके गए हैं, जिसका नतीजा एक अरसे के लिये सारे पंजाब की बरबादी है. ज़िन्दा इन्सानों के इस बदलाव की सबसे मिलती मिसाल हम बढ़े हुए तनेदार दरख़्तों को एक जगह से उखाड़ कर सैकड़ों मील दूर दूसरी जगह ले जाकर लगाने की कोशिश से ही दे सकते हैं और वह भी जब कि उन दरख़्तों को बेदर्दी के साथ उखाड़ा गया हो और बीच में जगह जगह धरते पटकते लेजाया गया हो. होशियार माली जब छोटे छोटे नरम पौदों को एक जगह से ले जाकर दूसरी जगह लगाता है तो हज़ार एहतियात और प्रेम के साथ उखाड़ता है और उतनी ही एहतियात और प्रेम से दूसरी जगह जमाता है. फिर भी इन पौदों में से आधे पौदे मुश्किल से पनपते हैं. इस तरह के बेदर्दी से उखाड़े हुए दरख़्तों में से नब्बे फ़ीसदी मरे बिना या मिटे बिना नहीं रह सकते. जहां वह अभागे जायँगे वहां रोग ही फैलायँगे.

बरबादी दोनों तरफ़ की लाज़मी है. इस उखाड़ फेंक को लगभग चार साल हो चुके लेकिन अभी तक न अधिकतर हिन्दू शारनार्थी भारत में ठीक तरह जम सके और न ज़ियादातर मुसलमान पनाहगुज़ीन पाकिस्तान में. इस समय भी हिन्दुस्तान में शायद साढ़े तीन या साढ़े चार करोड़ मुसलमान और पाकिस्तान में लगभग सवा करोड़ हिन्दू अपने अपने घरों में रह रहे हैं. इस में पूर्वी बंगाल भी शामिल है जहां की आबादी सब से घनी और जहां हिन्दुओं की गिनती सबसे ज़ियादा है गान्धी जी की बंगाल की कोशिश ने वहां की हिन्दू मुस्लिम जनता को पंजाब की तरह मिटने से बचा लिया. उसके बाद जवाहरलाल जी की कोशिश से नेहरू लियाकत समझौते ने भी बंगाल की बिगड़ती हुई हालत को बड़ी सुन्दरता से संभाला. अगर असली लाग के बदलाव ने पंजाब की सारी ज़िन्दगी को मटियामेट कर दिया तो इन बाकी बचे लगभग ५ करोड़ का बदलाव सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की ज़िन्दगी को इधर से उधर तक एक बार मटियामेट किये बिना नहीं रह सकता. दुनिया की वे बढ़ी हुई और खून की चाट लगी हुई क़ौमें, जिन्होंने हमारी अब तक की कोशिशों और चारों तरफ़ की हालतों से मजबूर होकर हमें यह आज़ादी सौंपी है, उस बदबख़्त दिन की बाट जोह रही हैं. वह इन्तज़ार में हैं कि हमारे मुल्क के जिस्म पर चारों तरफ़ घाव दिखाई दें और वे गिद्धों की तरह हमारे बचाव के नाम पर हमें चूसने के लिये लपकें. ईरान, इराक़, फ़िलस्तीन, अरब, मिस्र, चीन, कोरिया, इन्डोनेशिया यहां तक कि जापान और जर्मनी की हालत और इन सब मुल्कों में पच्छिमी ताक़तों के हथकण्डे हमारी आंखें खोलने के लिये काफ़ी होने चाहियें. हमारी बचत, हमारी सलामती इसी में है कि हम अपने कमज़ोर बदन को कहीं भी और ज़ियादा घाव लगने से बचावें. हम जहां तक बन पड़े देश भर में प्रेम, इन्सानियत, शान्ति और भाईचारे की जड़ें मज़बूत करके ही बच सकते हैं.

गांधी जी ने इस बात को भी बिलकुल ठीक देख लिया था कि दिल्ली हिन्दुस्तान की दहलीज़ या दूसरे शब्दों में हिन्दुस्तान का दिल है. अगर

दिल्ली में मुसलमान न रह सके तो फिर इन पांच करोड़ की उखाड़ पुखाड़ और सारे मुल्क की बरबादी नहीं रुक सकती इसलिये वह दिल्ली को बचाने के लिये मर मिटे.

## काश्मीर का मसला

अब ज़रा काश्मीर पर निगाह डालिये. हम सब काश्मीर को हिन्दुस्तान में मिला लेना चाहते हैं. पर यहां भी काश्मीर के सवाल के सीधे सादे राजकाजी पहलू को हम नहीं देख पाते. काश्मीर की अस्सी फ़ी सदी आबादी मुसलमान है. इनमें ज़ियादातर लकड़ी, चमड़े या ऊन के कारीगर हैं. इनके हाथ के बने ऊन के कपड़े सारे हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में चाव के साथ ख़रीदे जाते हैं. काश्मीर की ऊन की दस्तकारी दुनिया की ऊंची से ऊंची और बड़ी से बड़ी दस्तकारियों में से है यही वहां के लोगों की रोज़ी का सबसे बड़ा ज़रिया है. काश्मीर के माल की सबसे बड़ी मन्डी सन् '४७ से पहले अमृतसर थी. उससे उतर कर मन्डियां रावलपिन्डी और दिल्ली थीं. सैंकड़ों काश्मीरी कारीगर, दूकानदार, दलाल, एजेन्ट और आढ़तिये हर साल अमृतसर आते जाते थे और अपनी तिजारत के सिलसिले में महीनों ठहरते थे. आज अगर हम अमृतसर और दिल्ली की सड़कें, यहां के बाज़ार और यहां की सरायें मुसलमानों के लिये महफ़ूज़ नहीं कर सकते और नहीं रख सकते तो हम काश्मीर के मुसलमानों को किस मुंह से और किस उम्मीद के साथ पाकिस्तान को छोड़ कर हिन्दुस्तान को अपनाने के लिये कह सकते हैं. काश्मीर और काश्मीरियों को हम तभी अपना कर सकते हैं जब अमृतसर, जालन्धर, दिल्ली और बाक़ी हिन्दुस्तान में सच्चाई के साथ मुसलमानों को अपनावें. भारत में हिन्दू और मुसलमानों के मेल मिलाप पर ही काश्मीर में हमारी जीत निर्भर है

## एशियाई मुल्क और हम

हम काश्मीर के सवाल की और गहरी पेचीदगियों में नहीं जाना चाहते. इतना काफ़ी है कि मज़हबी निगाह से नहीं शुद्ध राजकाजी निगाह से काश्मीर अपना सकना या न अपना सकना. अफ़ग़ानिस्तान और ईरान

को अपना सकना या न अपना सकना है. और अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और दूसरे पच्छिमी एशियाई देशों को दोस्त या दुश्मन बनाना रूस को दोस्त या दुश्मन बनाना है. क़ौमों के गठजोड़ बन्धे हुए हैं. उनमें अदल बदल भी हो सकती है. पर सारे हिन्दुस्तान की क़िस्मत बहुत दरजे तक बाक़ी एशिया और सोवियट रूस की क़िस्मत से साथ बन्धी हुई है. कुछ नासमझ लोग अपनी फ़िरकेवाराना तंग-नज़री से अंधे हो कर किसी समय चीन से मिल कर मुस्लिम मुल्कों को जीतने की भी बातें सोचा करते थे इस तरह के राजकाजी बूझ बुझक्कड़ किसी दूसरे मुल्क में होते तो हम उनके भोलेपन पर हंस सकते थे. पर हमारे मुल्क के लिये यह भोलापन इस वक़्त हमारे जान के लाले साबित हो रहा है. चीन अपनी मुसीबतों में गिरफ़्तार है. तब भी चीन में किसी की निगाह इतनी बेमानी और बेतुकी नहीं है. हमें याद है कि हमारे मित्र बरमा के रेवरेण्ड उत्तामा ने हिन्दू सभा का सदर होना स्वीकार करके इस बात पर हिन्दू महा सभा से हाथ खींचा था कि उन्हें यह जान कर अचरज हुआ कि हिन्दुस्तान के मुसलमान 'हिन्दू' नहीं माने जाते.

दूसरे एशियाई देशों में भी हर तरह की पार्टियां हैं. हर पिछड़ा हुआ देश पच्छिम की बड़ी बड़ी ताक़तों की खेंचा-तानी का अखाड़ा बना हुआ है. पर हमें यह जानना चाहिये कि हिन्दुस्तान से बाहर की इसलामी हकूमतें और वहां के लोग बहुत बड़े दर्जे तक सदियों पहले की दक़ियानूसी मज़हबी तंग नज़री से बाहर निकल चुके. इसके सिवा उनके लिये जीने का कोई रास्ता भी नहीं था. मिसालें यहां देने की ज़रूरत नहीं है. हिन्दुस्तान में हमारी दोनों तरफ़ की तंगनज़री, एक दूसरे की तंगनज़री का नतीजा और उसकी उपज है. इस महारोग से ऊपर उठे बिना हमारी जान नहीं बच सकती.

## अपने हाथों अपनी बरबादी

पाकिस्तान, मिस्टर जिन्ना या लीग ने क्या किया यह कह कर अपनी तंग नज़री को जायज़ ठहराना ऐसा ही है जैसा यह कि अगर कोई एक

दिल्ली में मुसलमान न रह सकें तो फिर इन पांच करोड़ की उखाड़ पुखाड़ और सारे मुल्क की बरबादी नहीं रुक सकती इसलिये वह दिल्ली को बचाने के लिये मर मिटे.

## काश्मीर का मसला

अब ज़रा काश्मीर पर निगाह डालिये. हम सब काश्मीर को हिन्दुस्तान में मिला लेना चाहते हैं. पर यहां भी काश्मीर के सवाल के सीधे सादे राजकाजी पहलू को हम नहीं देख पाते. काश्मीर की अस्सी फ़ी सदी आबादी मुसलमान है. इनमें ज़ियादातर लकड़ी, चमड़े या ऊन के कारीगर हैं. इनके हाथ के बने ऊन के कपड़े सारे हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर में चाव के साथ ख़रीदे जाते हैं. काश्मीर की ऊन की दस्तकारी दुनिया की ऊंची से ऊंची और बड़ी से बड़ी दस्तकारियों में से है यही वहां के लोगों की रोज़ी का सबसे बड़ा ज़रिया है. काश्मीर के माल की सबसे बड़ी मन्डी सन् '४७ से पहले अमृतसर थी. उससे उतर कर मन्डियां रावलपिन्डी और दिल्ली थीं. सैकड़ों काश्मीरी कारीगर, दूकानदार, दलाल, एजेन्ट और आढ़तिये हर साल अमृतसर आते जाते थे और अपनी तिजारत के सिलसिले में महीनों ठहरते थे. आज अगर हम अमृतसर और दिल्ली की सड़कें, यहां के बाज़ार और यहां की सरायें मुसलमानों के लिये महफ़ूज़ नहीं कर सकते और नहीं रख सकते तो हम काश्मीर के मुसलमानों को किस मुंह से और किस उम्मीद के साथ पाकिस्तान को छोड़ कर हिन्दुस्तान को अपनाने के लिये कह सकते हैं. काश्मीर और काश्मीरियों को हम तभी अपना कर सकते हैं जब अमृतसर, जालन्धर, दिल्ली और बाक़ी हिन्दुस्तान में सच्चाई के साथ मुसलमानों को अपनावें. भारत में हिन्दू और मुसलमानों के मेल मिलाप पर ही काश्मीर में हमारी जीत निर्भर है.

## एशियाई मुल्क और हम

हम काश्मीर के सवाल की और गहरी पेचीदगियों में नहीं जाना चाहते. इतना काफ़ी है कि मज़हबी निगाह से नहीं शुद्ध राजकाजी निगाह से काश्मीर अपना सकना या न अपना सकना. अफ़ग़ानिस्तान और ईरान

को अपना सकना या न अपना सकना है. और अफ़ग़ानिस्तान, ईरान और दूसरे पच्छिमी एशियाई देशों को दोस्त या दुश्मन बनाना रूस को दोस्त या दुश्मन बनाना है. क़ौमों के गठजोड़ बन्धे हुए हैं. उनमें अदल बदल भी हो सकती है. पर सारे हिन्दुस्तान की क़िस्मत बहुत दरजे तक बाक़ी एशिया और सोवियट रूस की किस्मत से साथ बन्धी हुई है. कुछ नासमझ लोग अपनी फ़िरकेवाराना तंग-नज़री से अंधे हो कर किसी समय चीन से मिल कर मुस्लिम मुल्कों को जीतने की भी बातें सोचा करते थे इस तरह के राजकाजी बूझ बुझक्कड़ किसी दूसरे मुल्क में होते तो हम उनके भोलेपन पर हंस सकते थे. पर हमारे मुल्क के लिये यह भोलापन इस वक़्त हमारे जान के लाले साबित हो रहा है. चीन अपनी मुसीबतों में गिरफ़्तार है. तब भी चीन में किसी की निगाह इतनी बेमानी और बेतुकी नहीं है. हमें याद है कि हमारे मित्र बरमा के रेवरेण्ड उत्तमा ने हिन्दू सभा का सदर होना स्वीकार करके इस बात पर हिन्दू महा सभा से हाथ खींचा था कि उन्हें यह जान कर अचरज हुआ कि हिन्दुस्तान के मुसलमान 'हिन्दू' नहीं माने जाते.

दूसरे एशियाई देशों में भी हर तरह की पार्टियां हैं. हर पिछड़ा हुआ देश पच्छिम की बड़ी बड़ी ताक़तों की खेंचा-तानी का अखाड़ा बना हुआ है. पर हमें यह जानना चाहिये कि हिन्दुस्तान से बाहर की इसलामी हकूमतें और वहां के लोग बहुत बड़े दर्जे तक सदियों पहले की दक़ियानूसी मज़हबी तंग नज़री से बाहर निकल चुके. इसके सिवा उनके लिये जीने का कोई रास्ता भी नहीं था. मिसालें यहां देने की ज़रूरत नहीं है. हिन्दुस्तान में हमारी दोनों तरफ़ की तंगनज़री, एक दूसरे की तंगनज़री का नतीजा और उसकी उपज है. इस महारोग से ऊपर उठे बिना हमारी जान नहीं बच सकती.

## अपने हाथों अपनी बरबादी

पाकिस्तान, मिस्टर जिन्ना या लीग ने क्या किया यह कह कर अपनी तंग नज़री को जायज़ ठहराना ऐसा ही है जैसा यह कि अगर कोई एक

तरफ़ से हमारे घर को जलाने लगे तो हम दूसरी तरफ़ से मशाल ले कर घर को भस्म कर देने में लग जावें. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बंटवारे का हवाला देकर दो मज़हबों की बिना पर दो-नेशन के सिद्धांत को ख़ुद मान लेना और 'हिन्दू राष्ट्र' और 'हिन्दू राज' की बातें करना, मुल्क के दुश्मनों के हाथों में खेलना और अपने को आप बरबाद कर लेना है. इसका नतीजा है पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच की दीवार को मज़बूत करना और नई दीवारों को खड़ा होने का मौक़ा देना. देश को फिर से एक करने, ज़िन्दा रखने और ख़ुशहाल बनाने का तरीक़ा इन तंग निगाहों से ऊपर उठना है.

बहुत से लोग हिन्दुस्तान के मुसलमानों या पाकिस्तान के हिन्दुओं की वफ़ादारी पर शक प्रकट करते रहते हैं और मौके, बे-मौके, उनसे वफ़ादारी की क़समें लेने या वफ़ादारी का ऐलान कराने की बात करते रहते हैं. इस तरह की बातें न तो करने वालों को शोभा देती हैं और न किसी में वफ़ादारी या ख़ुददारी पैदा कर सकती हैं. और ज़ियादा अजीब बात यह है कि जो लोग इस तरह की बातें करते हैं, उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो ख़ुद या जिनके नातेदार अभी कल तक विदेशी अंग्रेज़ सरकार की नौकरियाँ किया करते थे. बहुत से ऐसे महकमों में काम करते थे जिनसे देश की आज़ादी चाहने वालों और उनकी कोशिशों को साफ़ धक्का पहुँचता था. देश के साथ वफ़ादारी और बेवफ़ाई का ठेका कभी भी किसी एक धर्म वालों ने नहीं लिया: आज भी अगर कोई पाकिस्तान के मुसलमानों या हिन्दुस्तान के हिन्दुओं में अपने यहां की सरकारों के ख़िलाफ़ देशघातक तैयार करना चाहे तो हमें लज्जा के साथ मानना पड़ेगा कि यह कोई कठिन काम नहीं है. ब्रिटिश सरकार की ख़ुफ़िया पुलिस, उसकी वह कचहरियां जिन्होंने देशभक्तों को सज़ायें दीं और उसके वे जेलख़ाने जिन्होंने आज़ादी के मतवालों को बन्द कर रखा या फांसियां तक दीं, सदा हिन्दू, मुसलमान और सिख सबसे भरे रहे हैं. अपने सगे रिश्तेदार पृथ्वीराज के साथ दग़ा करने वाला जयचन्द, सिराजुद्दौला को धोका देने वाला अमीचन्द, अपने

देश और मालिक के साथ छल करके पंजाब को अंग्रेज़ों के हाथ में सौंपने वाले तेजसिंह और लालसिंह और वह दोनों भाई जगत सेठ जिन्होंने आज से २०० बरस पहले चांदी के टुकड़ों के बदले में बंगाल को अंग्रेज़ों के हाथ बेच कर इस देश में अंग्रेज़ी राज की नींव डाली, मुसलमान न थे. हिन्दुस्तान का इतिहास इस तरह की मिसालों से भरा पड़ा है जिनमें देश के रहने वाले मुसलमानों ने अपने हिन्दू देश भाइयोंके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर डट कर बाहर से आने वाले मुसलमान हमलावरों का मुक़ाबला किया. देशघातक और देशभक्त सब जगह सब धर्मों के लोगों में पैदा होते रहे हैं और पैदा होते रहेंगे. हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज का इतिहास भी इस तरह की मिसालों से भरा हुआ है. हैदरअली और टीपू सुलतान अगर देश की आज़ादी के लिये लड़ते लड़ते प्रान दे सकते थे तो सम्राट बहादुर शाह का समधी मिरज़ा इलाही बख़्श बूढ़े सम्राट के साथ दग़ा करके दिल्ली अंग्रेज़ों के हवाले कर सकता था. शिवा जी और रानी लक्ष्मीबाई दोनों की फ़ौजों में मुसलमान अफ़सर और मुसलमान सिपाही मौजूद थे जिन्होंने मरते दम तक अपने हम मज़हबों के ख़िलाफ़ भी अपने मालिक का साथ दिया. १७६१ की पानीपत की लड़ाई में अहमदशाह अब्दाली के मुक़ाबले के लिये मरहठों का साथ देने को लखनऊ का नवाब वज़ीर और उसकी सेना का फेरा का फेरा डटा हुआ था. इधर के तीस बरस के आन्दोलनों में भी हिन्दू देशभक्तों और मुसलमान देशभक्तों, हिन्दू देशघातकों और मुसलमान देशघातकों, हिन्दू जाँनिसारों और मुसलमान जाँ निसारों की मिसालें भरी पड़ी हैं. किसी ब्राह्मन लड़के या महाराष्ट्र लड़के के महात्मा गांधी की हत्या करने की वजह से या बहुत से महाराष्ट्रियों के साज़िश में शामिल होने की वजह से भी आम ब्राह्मनों या आम महाराष्ट्रियों से वफ़ादारी की क़समें नहीं ली जा सकती. वफ़ादारी दिल की चीज़ है और आपस के प्रेम, मेल मिलाप, अच्छे सलूक, देश की शांति और ख़ुशहाली पर निर्भर है. आज कल की बेएतबारी और बदअमनी की हालत में जो मुसलमान घबरा कर हिन्दुस्तान से पाकिस्तान जाने के लिये तैयार हो

जाते हैं, या जो हिन्दू पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आने के लिये तैयार दिखाई देते हैं उनके ऐसा करने को अपने यहां की सरकार से बेवफ़ाई का सबूत समझना भी उनकी मुसीबतों से आंख बन्द करना और दोनों तरफ़ के ज़ियादा तादाद लोगों के पापों पर पर्दा डालना है. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं और सारा इतिहास इस बात का गवाह है कि एक बार दोनों तरफ़ सच्ची शांति और अमन आमान हो जाने पर हिन्दुस्तान के मुसलमान पाकिस्तान की तरफ़ से हमले को और पाकिस्तान के हिन्दू हिन्दुस्तान की तरफ़ से हमले को अपने जान माल, अपने बाल बच्चों और अपने सुख चैन पर हमला समझेंगे और वैसा ही बर्ताव करेंगे. किसी भी संकट के समय हर सरकार अपने दोस्त और दुश्मन को पहचान कर उसके साथ मुनासिब बर्ताव करना जानती है. किसी की लाचारी से फ़ायदा उठाकर कर जो क़समें ली जावें उनकी कोई क़ीमत नहीं होती. यह रास्ता दिलों को और दूर कर देने का रास्ता है. दूसरे की लाचारी की हालत में सच्चा एहसान और सच्चा प्रेम दिलों को नज़दीक लाता है और दिलों में एक दूसरे की वफ़ादारी के अंकुवे पैदा करता है.

यह है हमारी इस वक़्त की हालत का राजकाजी पहलू.

: २ :

# धार्मिक पहलू

अब हम इस पहलू से हटकर इस सवाल को धर्म या मज़हब की निगाह से देखना चाहते हैं. दुर्भाग्य से आज हमारे देश में सब से ज़ियादा मुसीबतें धर्म और मज़हब ही के नाम पर ढाई जा रही हैं. सब से पहला सवाल यह है कि धर्म या मज़हब है क्या चीज़ और इसका इनसान की ज़िन्दगी के साथ क्या सम्बन्ध है.

## धर्म क्या है ?

संस्कृत शब्द धर्म "धृ" धातु से निकला है जिस के मानी धारण करना यानी सम्हालना या सम्हाले रखना है. संस्कृत की धर्म की किताबों में जगह जगह यह बताया गया है कि धर्म क्या चीज़ है और उसके क्या लक्षण हैं. मिसाल के लिये महाभारत में एक जगह जाजलि ने ऋषि से पूछा कि धर्म क्या है. ऋषि ने जवाब दिया —

धारणाद्धर्म इत्याहु धर्मेण विधृताः प्रजाः ।
यःस्याद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः ॥

अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम् ।
यः स्यादहिंसया युक्तः स धर्म इति निश्चयः ॥

प्रभवार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम् ।
यः स्यात्प्रभवसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः ॥

सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः ।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ॥

यानी धर्म शब्द धारण से बना है, धर्म से ही सब लोग सम्हले हुए हैं. जो चीज़ सब को सम्हाले और मिलाये रक्खे वही धर्म है, यह पक्की बात है.

किसी प्राणी को किसी तरह का दुःख न पहुँचे, इसके लिये धर्म का बखान किया गया है. जिस बात से किसी को भी दुःख न पहुँचे—वही धर्म है, यह पक्की बात है.

सब प्राणियों के भले के लिये धर्म का बखान किया गया है. जिस काम से सबका भला हो उसी को धर्म जानो, यह पक्की बात है.

जो आदमी हमेशा दिल से सबका भला चाहता है और अपने कामों से, मन से और वचन से सबका भला करने में लगा रहता है, हे जाजलि ! वही धर्म का जानने वाला है.

## हिन्दू धर्म

आखिर की दो लाइनें जो सारे श्लोक का इत्र हैं, सोने के हरफ़ों में लिखने लायक़ है. यही विचार तरह तरह के रूपों में हिन्दू धर्म की सब किताबों में बारबार दोहराया गया है. हिन्दू धर्म इनसानी ज़िन्दगी पर एक ख़ास तरह की निगाह का नाम है. किसी ख़ास मत, संप्रदाय या फ़िरक़े का नहीं. हिन्दू धर्म एक उदार, ऊंची और सबको अपने घेरे में समा लेने वाली चीज़ है. हिन्दू धर्म कोई तंग चीज़ नहीं है. दुनिया

के दूसरे धर्मों या मज़हबों की तरह हिन्दू धर्म की बेशुमार किताबों में भी तरह तरह की रस्मों और रीति रिवाजों का ज़िक्र मिलेगा. पर ऋग्वेद से लेकर भगवद्गीता तक जहां कहीं भी धर्म की तारीफ़ की गई है, कहीं भी किसी रीति रिवाज को धर्म नहीं कहा गया. एक ख़ास बात तो यह है कि हिन्दू धर्म की किसी किताब में भी इस धर्म का नाम 'हिन्दू धर्म' नहीं है. संस्कृत की धर्म पुस्तकों में भी हिन्दू शब्द नहीं मिलता. जहां कहीं इस धर्म को कोई नाम दिया गया है वहां भी उसे सिर्फ़ 'मानव धर्म' यानी मनुष्य का धर्म या इनसानियत का मज़हब ही कहा गया है. यही हमारे पांच हज़ार वर्ष के इतिहास से साबित है. इस देश में तरह तरह के रीति रिवाजों और पूजापाठ के सब अलग अलग तरीक़ों के मानने वालों के लिये गुंजायश रही है. हिन्दू शब्द किसी ख़ास रीति-रिवाज या किसी ख़ास मानता को ज़ाहिर नहीं करता. यह शब्द आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पहले विदेशी यूनानियों और ईरानियों ने इस देश के रहने वालों के लिये इस्तेमाल करना शुरू किया था और सच पूछिये तो यह देश को ज़ाहिर करता है, किसी ख़ास मज़हबी विचार को नहीं. सिन्धु नदी को 'सिन्धु' और 'हिन्दू' दोनों नामों से पुकारा जाता था इसी लिये बाहर के लोग इस नदी के पार रहने वाले सब लोगों को 'हिन्दू' नाम से पुकारने लगे. हिन्दू शब्द पहले पहल इन्हीं मानों में यूनानियों की किताबों में मिलता है. उसी सिलसिले में आज तक अमरीका में इस देश के सब रहने वालों को, चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान या कोई और, हिन्दू कहा जाता है और हिन्दू ही लिखा जाता है. जो मुसलमान यहां से हज्ज करने के लिये मक्का जाते हैं, उन्हें भी बाहर के मुसलिम देशों में 'हिन्दी' या 'हिन्दू' दोनों नामों से पुकारा जाता है. इसलाम की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी मिस्र की राजधानी क़ाहिरा में है. उस यूनिवर्सिटी में हिन्दुस्तान से जाने वाले मुसलमान तालिबइल्मों के लिये एक ख़ास बोर्डिंग हाउस है जिसे "हिन्दू बोर्डिंग हाउस" कहा जाता है.

जहां तक देश के अन्दर का सवाल है आज तक वह वैष्णव, जो किसी तरह का भी गोश्त खाना सबसे बड़ा पाप मानता है और वह शाक्त, जिसकी पूजा बिना गोश्त के नहीं हो सकती—दोनों एक बराबर हिन्दू हैं. हर चीज़ में ब्रह्म यानी ख़ुदा को देखने वाला वेदान्ती और ईश्वर से ही इन्कार करने वाला चार्वाक का पैरो दोनों एक बराबर हिन्दू हैं. ऐसे ही मूर्ति पूजक सनातन धर्मी और मूर्ति पूजा को पाप मानने वाला आर्यसमाजी दोनों एक से हिन्दू हैं. हम फिर दोहराते हैं कि हिंदू धर्म किसी ऊपरी रीति रिवाज या किसी मानता या किसी मूढ़ विश्वास का नाम नहीं है.

तो फिर हिन्दू धर्म है क्या चीज़ ? ऊपर हम महाभारत का हवाला दे चुके हैं. दूसरे हिन्दू धर्म ग्रन्थों में सबसे मशहूर और मानी हुई धर्म की तारीफ़ मनु महाराज के बताए हुए धर्म के दस लक्षण हैं. मनुस्मृति में लिखा है—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

यानी—धीरज, सबके क़सूर माफ़ करना, अपनी ख़ुदी को दबाना, दूसरे का हक़ न छीनना, सफ़ाई, अपनी इन्द्रियों यानी नफ़्स पर क़ाबू, समझदारी, जानकारी, सचाई और ग़ुस्सा न करना यही धर्म की दस पहचान हैं. यह है हिन्दू धर्म का सार. इनमें कहीं भी किसी रीति रिवाज, पूजा पाठ, ऊपरी निशान या किसी खास मानता का ज़िक्र नहीं है. इनसानी ज़िन्दगी के यह वह ऊंचे असूल हैं जिनसे किसी भी धर्म या मज़हब का मानने वाला इन्कार नहीं कर सकता. इसी तरह के बेशुमार हवाले हिन्दू धर्म की दूसरी पुस्तकों से दिये जा सकते हैं

हिन्दू धर्म का बखान करने वालों ने इतने पर ही तसल्ली नहीं की. दुनिया के कम समझ लोगों के लिये उन्होंने जगह जगह यह भी

साफ़ कर दिया कि अलग अलग रीति रिवाजों का धर्म के साथ क्या सम्बन्ध है. महाभारत का कहना है—

गवामनेकवर्णानां क्षीरस्यास्त्येकवर्णता ।

क्षीरं पश्यते ज्ञानी लिङ्गिनास्तु गवां यथा ॥

यानी–गाय अलग अलग रंगों की होती है. पर दूध सबका एक ही रंग का होता है. जो समझदार लोग हैं वे दूध के रंग को देखते हैं और जो ऊपर की निशानियों और रीति रिवाजों में फंसे हुए हैं वह गायों के रंग को देखते हैं.

जिसे हिन्दू धर्म कहा जा सकता है उसका सबसे पक्का और आखिरी रूप उपनिषदों और भगवद्गीता में बयान किया गया है. ये पुस्तकें ही हिन्दू धर्म के चोटी के फूल कही जा सकती हैं। उपनिषदों में कहीं भी किसी रीति-रिवाज या ऊपरी निशानी को धर्म का आवश्यक अंग नहीं माना गया. उपनिषदों में बार बार कहा गया है कि—'जो आदमी सब प्राणियों को अपनी तरह देखता है, सबके अन्दर अपने को और अपने अन्दर सबको देखता है—वही देखने वाला और वही धर्मात्मा है।" (ईश)

भगवद्गीता सब उपनिषदों का निचोड़ है. हिन्दू मात्र के लिये गीताधर्म की खास किताब है. गीता के समय में भी तरह तरह के रीति-रिवाज और पूजा पाठ के अलग अलग तरीके इस देश में पैदा हो चुके थे. उन सबको गैर ज़रूरी बताते हुए उनके बारे में गीता का कहना यही है कि—

"जो जिस तरह भगवान को मानते हैं, भगवान उसी तरह उनको मिलते हैं. लोग अलग अलग रास्तों से चल कर भी उसी एक परमेश्वर तक पहुँचते हैं." (४–११)।

इस देश की सबसे बड़ी कुचाल जिसने सारे देश को घुन की तरह लग कर उसे विनाश के गड्ढे तक पहुंचा दिया और जो सारे

'साम्प्रदायिकता' और हमारी सारी मुसीबतों की असली जड़ है, जन्म से जात पात और छुआछूत है. गीता इसे जड़ मूल से ग़लत मानती है. गीता का कहना है—

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥" (५-१८)

यानी—जो आदमी विद्वान् और शरीफ़ ब्राह्मण को, गाय को और हाथी को, कुत्ते को और चण्डाल को सबको एक निगाह से देखे, वही पण्डित है.

आख़िरी अध्याय में गीता ने साफ़ कहा है कि—"सब धर्मों को छोड़ कर सिर्फ़ एक ईश्वर में मन को लगाना ही पाप से बचने का एकमात्र तरीक़ा है ( १८-६६ )." इस श्लोक में धर्म शब्द से मतलब धर्म के नाम पर उन तरह तरह के रीति रिवाजों से है जिनका ज़िक्र अर्जुन ने गीता के पहले अध्याय में 'जाति धर्मों' और 'कुल धर्मों' ( १-४०,४३ ) के नाम से किया है. यानी गीता का उपदेश यह है कि इस तरह के सब पुराने ( १-४०,४३ ) रीति रिवाजों और ऊपर के मज़हबी फ़र्क़ों को छोड़ कर, उनसे ऊपर उठ कर आदमी को सिर्फ़ दूसरों के साथ नेकी करना और एक ईश्वर की तरफ़ ही ध्यान लगाना चाहिये.

असली धर्म गीता के मुताबिक़ है क्या चीज़ ? गीता के अपने शब्दों में असली और पूरा धर्म यह है—

"जो आदमी अपने आप पर क़ाबू पाकर, अपनी इन्द्रियों यानी नफ़्स को जीत कर, दुई यानी ग़ैरियत से ऊपर उठ कर, अपने निजी सुख दुख, नफ़े नुक़सान की बिलकुल परवाह न करते हुए, सब दुनिया का भला चाहते हुए, किसी से दुश्मनी या बैर न रखते हुए, सबके भले के कामों में लगे हुए, दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को समझ कर पूरा करता है, वही धर्मात्मा है.

नरक के तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ. ईश्वर को सबसे ज़ियादा प्यारा वह आदमी है जिससे दुनिया में कोई आदमी न डरता हो और न जिसे ख़ुद किसी से किसी तरह का डर हो. इस तरह अपनी ख़ुदी को मार कर दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करने में लगे हुए, सबकी भलाई करते हुए ही आदमी सच्चे ज्ञान को पा सकता है. सच्चा ज्ञान यही है कि आदमी सबको अपनी तरह, अपने अन्दर सबको, सबको ईश्वर के अन्दर और सबके अन्दर एक ईश्वर को देखे. सिर्फ़ इस तरह अपने ऊपर क़ाबू और दूसरों की सेवा के ज़रिये ही आदमी अपनी आत्मा को पाक करते करते आत्मा की असली तरक़्क़ी के रास्ते पर क़दम बढ़ा सकता है और फिर अपने अन्दर उस परमात्मा को साक्षात् करके, यानी उसका दीदार हासिल करके, जो सब रोशनियों की रोशनी है और सबके, दिलों में बैठा हुआ है, मुक्ति यानी निजात हासिल कर सकता है (२–३८; ३–१८, २५: ५–७, १६, १७, २५, ३०: ६–२६, ३०, ३१, ३२; ११–५५: १२–८, १५: १३–१७: १५–१५; १६–२५; १८–६१)

यह है गीता धर्म का और इसीलिये हिन्दू धर्म का निचोड़. और सब रीति रिवाज और ऊपरी फ़रक़ गीता के मुताबिक़ छोड़ देने की चीज़ें हैं. (१८–६६)

दूसरे शब्दों में सबके साथ नेकी, अपने ऊपर क़ाबू और सबके अन्दर बैठे हुए भगवान की तरफ़ निगाह और ख़याल को ले जाने की कोशिश करना, यही हिन्दू धर्म है. आज सदियों से सैकड़ों तरह के अच्छे बुरे रीति रिवाजों, ऊपरी निशानियों और पापों ने इस धर्म को ढग रक्खा है. यही हमारी सारी गुमराही और मुसीबतों का कारन है.

## इसलाम

हिन्दू धर्म के गिरावट के ज़माने में ही इसलाम का इस देश में आना हुआ. जिस तरह हिन्दू धर्म की असली अच्छाइयां, ऊंचाइयां

और उसमें बाद में आई हुई बुराइयां और तंग नज़रियां थीं, उसी तरह इसलाम में भी, जिस शकल में वह हमारे देश में आया, अपनी ख़ूबिया और बुराइयां, ऊंचाइयां और तंग नज़रियां दोनों मौजूद थीं. दुनिया के हर मज़हब का असली रूप उस मज़हब के मानने वालों की ग़लतियों और कमज़ोरियों की वजह से धीरे धीरे हमेशा से बदलता और बिगड़ता रहा है. यहां तक कि अक्सर हर मज़हब के नाम लेवा अपने मज़हब के बुनियादी असूलों से कोसों दूर हट जाते हैं और बिलकुल उलटा ही चलने लगते हैं. यहां हम इसलाम की बुनियादी तालीम और उसकी बाद की शकल में तफ़सील से नहीं जा सकते.

मज़हब शब्द के माने रास्ता, पथ, पंथ या मार्ग हैं. दीन शब्द के माने रास्ता भी हैं और सज़ा या जज़ा यानी कर्मों के फल भी हैं.

इसलाम के बारे में जहां तक क़ुरान की तालीम और मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी और उपदेशों का सवाल है, इसलाम किसी एक तंग फ़िरक़े या सम्प्रदाय का नाम नहीं है. क़ुरान में कुछ बातें बहुत साफ़ साफ़ और बार बार कही गई हैं—

पहली यह कि सब इनसान एक क़ौम है.

"सब इनसान एक ही 'वाहिद उम्मत' यानी एक ही क़ौम हैं"

( २—२१३ )

"और तमाम इनसान इसके सिवा और कुछ नहीं हैं कि सब एक ही क़ौम ( वाहिद उम्मत ) हैं." १०—१९ )

"सचमुच तुम इनसानों की एक ही क़ौम हे और एक ही अल्लाह तुम सबका रब्ब है. इसलिये सब उसी की पूजा इबादत करो. लोगों ने काट काट कर अपने अलग अलग गिरोह बना रक्खे हैं. पर सबको एक ही अल्लाह के पास जाना है" ( २१—९२, ९३ )

मुहम्मद साहब जब आधी रात को उठकर नमाज़ पढ़ा करते थे तो हमेशा नमाज़ से पहले यह फ़िक़रा कहा करते थे:—

"ऐ अल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह एक है और सब आदमी भाई भाई हैं"

यहां 'सब आदमी' में मुसलमान, ग़ैर मुसलमान या अच्छे बुरे का फ़रक़ नहीं किया गया.

दूसरी चीज़ जो कुरान में बार बार दोहराई गई है, यह है कि मोहम्मद साहब से पहले भी हर मुल्क और हर क़ौम में रसूल होते रहे हैं—

"और हर क़ौम में रसूल हुए हैं" १०—४७)

"हर क़ौम में धर्म का रास्ता बताने वाले पैदा हुए हैं." ( १३—७ )

"इसमें कोई भी शक नहीं कि तुम से पहले अल्लाह ने सब क़ौमों में रसूल भेजे हैं." ( १४—४ )

"और जो रसूल जिस क़ौम में भेजा गया है वह उसी क़ौम की बोली में पैग़ाम लेकर भेजा गया है ताकि उन्हें साफ़ साफ़ समझा सके." ( १४—४ )

क़ुरान के मुताबिक़ किसी रसूल को मानना और किसी को न मानना या रसूलों में फ़रक़ करना किसी को बड़ा और किसी को छोटा मानना—'कुफ़्र' यानी नाशुकरापन है.

"सचमुच जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों को नहीं मानते और जो अल्लाह और उसके रसूलों में फ़रक़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ रसूलों को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और इनके बीच से एक अलग ही रास्ता बना लेना चाहते हैं, यह लोग ही सच्चे काफ़िर यानी नाशुकरे हैं और अल्लाह ने इनके लिये ज़िल्लत की सज़ा तय कर रखी है." (४—१५०, १५१)

तीसरी चीज़, क़ुरान अपने से पहले की सब मज़हबी किताबों को भी अपनी ही तरह ठीक मानता है—

"यह क़ुरान वह सच्चाई है जो अपने से पहले की मज़हबी किताबों की तसदीक़ करती है यानी उन सबको सच बतानी है."

( २—६१ )

"अल्लाह ने अपने पास के असल ज्ञान में से जो कुछ ज्ञान तुम्हें (मोहम्मद साहब को) वही (ईश्वर प्रेरणा) के ज़रिये दिया है वह वह सच्चाई है जो अपने से पहले की धर्म पुस्तकों की तसदीक़ करती है."

(३५—३१)

"और तुम से यानी मोहम्मद साहब से कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो सचमुच तुमसे पहले के रसूलों से न कही गई हो."

(४१—४३)

चौथी चीज़ जो क़ुरान की तालीम में साफ़ चमकती है यह है कि सचाई का ठेका दुनिया के किसी एक मज़हब ने नहीं ले रखा बल्कि दुनिया के सब बड़े बड़े मज़हबों की असली तालीम एक है.

"यहूदी कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत में नहीं जा सकता. ईसाई कहते हैं कि सिवा ईसाई के कोई जन्नत में नहीं जा सकता. यह सब इन लोगों के झूठे वहम हैं. इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो (अपनी ही मज़हबी किताबों से) सबूत निकाल कर दिखाओ. नही, जिस किसी ने अपने आपको अल्लाह को मरज़ी पर छोड़ दिया है और जो दूसरों के साथ नेकी करता है उसे अपने रब्ब से फल मिलेगा, उसे न किसी का डर है और न किसी तरह का ग़म होगा." (२—१११, ११२)

"इसमें कोई शक नहीं कि चाहे वे लोग हों जो इस क़ुरान पर ईमान लाये हैं और चाहे वे जो यहूदी हैं या वे हों जो ईसाई हैं या वे हों जो साबी हैं या कोई भी हों, जो कोई भी अल्लाह को मानता है और आख़िरत में यानी अपने कामों के फल में यक़ीन करता है और नेक काम करता है, उन सबको अपने रब्ब से फल मिलेगा, उन्हें न किसी बात का डर है और न किसी तरह का अफ़सोस होगा." (२—६२)

साबी उस ज़माने के अरब के एक और मज़हब का नाम है.

क़ुरान के मशहूर और माने हुए अंग्रेज़ी तरजुमा करने वाले अब्दुल्ला यूसुफ़ अली साहब ने इस आयत का तरजुमा करते हुए साबी शब्द की बाबत लिखा है कि—"मैं समझता हूं कि इस मामले में इस शब्द के अन्दर ज़रथुस्त्र, वेद, बुद्ध, कन्फ़ूत्से और धर्म के और सब महान उपदेशकों के पीछे सच्चाई से चलने वाले सब लोग शामिल हैं"

अलग अलग मज़हबों और उनकी किताबों और रीति-रिवाजों की तरफ़ क़ुरान का रुख़ नीचे की आयत में बिल्कुल साफ़ हो जाता है—

"अल्लाह ने तुम पर यानी मोहम्मद साहब पर यह किताब (क़ुरान) उतारी है जो सच्ची है.

यह उन किताबों को सच्चा ठहराती है जो इससे पहले आ चुकी हैं और जो सब उस असली किताब यानी उस ज्ञान में से ली गई हैं जो अल्लाह ही के पास है. यह किताब क़ुरान उन सब अपने से पहले की किताबों की हिफ़ाज़त करती है. इसलिये अल्लाह ने जो कुछ ज्ञान तुम्हें दिया है उसीसे उनके बीच फ़ैसला करो और लोगों के वहमों में पड़कर उस सच्चाई से न फिरो जो तुम पर उतरी है. अल्लाह ने हर एक के लिये अलग अलग शरह और मिनहाज यानी अलग अलग रीति रिवाज और पूजा के तरीक़े बना दिये हैं. अल्लाह चाहता तो सब को एक ही फ़िरक़ा यानी एक ही रीति रिवाज के पालने वाला बना देता. लेकिन, अल्लाह चाहता था कि जिसको जो तरीक़ा बता दिया है उसी में उसको परखे. इसलिये (इन फ़रक़ों में न पड़कर) दूसरों की भलाई के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करो. सबको अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है तब जिन बातों में तुम में फ़रक़ है, वह अल्लाह तुम्हें समझा देगा." (५-४८

"मज़हब के मामले में किसी के साथ कोई ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये." (२-२५६)

पाँचवीं चीज़ क़ुरान में सच्चाई, सबके साथ नेकी और इन्साफ़ वग़ैरह पर ज़ोर देते हुए जगह जगह बताया गया है कि असली दीन या मज़हब नेकी है, कोई रीति रिवाज नहीं—

"धर्म या नेकी इस में नहीं है कि तुमने अपना मुंह नमाज़ के वक़्त पूरब की तरफ़ कर लिया या पच्छिम की तरफ़. धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आख़रत यानी कर्मों के फल को माने, फ़रिश्तों ( यानी आदमी के दिल के अन्दर के नेक रुजहानों ) को माने, सब मज़हबी किताबों और अगले पिछले सब रसूलों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते अपने माल और दौलत में से अपने नाते दारों को, यतीमों को, ज़रूरत मन्दों को, राह चलतों को और मांगने वालों को दान दे और गुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत खर्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात यानी ग़रीबों को ख़ैरात देता रहे, जब कभी किसी से वादा करे तो उसे पूरा करे और मुसीबतों में, तकलीफ़ में और सख़्ती के दिनों में सब्र करे. जो लोग ऐसा करते हैं वही सच्चे हैं और वही मुतक़ी यानी परहेज़गार हैं." (२-११७)

"लोगों को सिवा इसके और कुछ हुकुम नहीं दिया गया कि वे पाक दिल से अल्लाह से दुआ मांगते रहें और ग़रीबों को दान दें, यही असली और पक्का दीन है." (१८-५)

"क्या तुमने सोचा है कि दीन को झूटा ठहराने वाला आदमी कौन है? दीन को झूटा ठहराने वाला आदमी वह है जो किसी यतीम को सताता है और ग़रीबों को खाना देने पर ज़ोर नहीं देता. ऐसे आदमी जब नमाज़ पढ़ते हैं तो उन पर अफ़सोस होता है. क्योंकि वे नमाज़ के असली मतलब की तरफ़ ध्यान नहीं देते. वह सिर्फ़ दिखावा करते हैं और ख़ैरात से हाथ रोकते हैं." (१०७ १ से ७)

"बुराई का बदला भलाई से दो. अल्लाह ख़ूब जानता है कि लोग क्या चाहते हैं." (२३-९६)

मोहम्मद साहब से बार बार पूछा जाता था—इसलाम क्या है? और ईमान क्या है? उनका जवाब हमेशा एक ही ढंग का होता था—

अम्र लिखता है, मैंने पैग़म्बर से पूछा "इसलाम क्या है?" उन्होंने जवाब दिया—"ज़बान को पाक रखना और मेहमान की ख़ातिर करना." मैंने पूछा—"ईमान क्या है?" उन्होंने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई करना." (अहमद)

मोहम्मद साहब ने एक जगह कहा है—

"मोमिन वह है जिसके हाथों में सब आदमी अपनी जान और माल को सौंप कर बे खटके रहें." (बुख़ारी)

एक और जगह कहा है—

"अगर मोमिन होना चाहता है तो अपने पड़ोसी का भला कर और अगर मुस्लिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है वही सब के लिये समझ और बहुत मत हंस, क्योंकि सचमुच ज़ियादा हंसने से दिल सख़्त हो जाता है." (तिरमिज़ी)

मोहम्मद साहब के इस तरह के क़ौल अनगिनत नक़ल किये जा सकते हैं.

"इसलाम" के लफ़्ज़ी माने हैं—अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ देना. मुसलमान के लफ़्ज़ी माने हैं—वह जिसने अपने आपको अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया हो यानी ईश्वरार्पण कर दिया हो. क़ुरान के लफ़्ज़ी माने हैं—कोई चीज़ जो पढ़ी जावे या एलान की जावे. क़ुरान में जगह जगह मोहम्मद साहब से पहले के सब दूसरे बड़े धर्मों को 'इसलाम' और उनके मानने वालों को "मुस्लिम" या "मुसलमान" कह कर पुकारा गया है. (२४—७८ वग़ैरह) इसी तरह क़ुरान में क़ुरान से पहले की मज़हबी यानी ईश्वरीय किताबों को भी 'क़ुरान' नाम दिया गया है और उन लोगों को, जिन्हों ने इन सब ईश्वरीय किताबों को अलग अलग करके ईश्वरीय ज्ञान के "टुकड़े टुकड़े कर डाले" "मुक़्तसेमीन" यानी फूट डाने वाले कहा गया है. (१५—९०, ९१)

हमारा मतलब यहां इस चीज़ से नहीं है कि दुनिया के मुसलमान कब किस देश में क्या मानते, कहते या करते रहे हैं. हमारा मतलब सिर्फ़ क़ुरान के असली और बुनियादी असूलों और इसलाम के पैग़म्बर के उपदेशों से है.

जिस तरह इसलाम के हिन्दुस्तान में पहुँचने के वक़्त हिन्दू धर्म अपनी लगभग सारी ऊंचाई और बड़ाई को खोकर जातपात, छुआछूत, आदमी आदमी में ऊंच नीच और तरह तरह के पाखन्डों झूटी मानताओं और घातक रीति रिवाजों में फँसा हुआ था, उसी तरह इसलाम भी इस देश मे पहुँचते पहुँचते और फैलते फैलते तरह तरह की ग़लत मानताओं, कुरीतिनों तंगनज़रियों से गिर गया. ख़ास कर राजकाज का जामा पहन कर, ताक़त के नशे में, कहीं कहीं इसलाम अपनी पाकी और दरिया दिली खोकर, ज़ुल्म और हठधर्मी की चीज़ बन गया.

## गिरावट

सच यह है कि जिस तरह हरद्वार की गंगा और कलकत्ते की गंगा में आकाश पाताल का अन्तर है इसी तरह दुनिया के सब मज़हबों में समय के साथ साथ गिरावट आती रही है. हिन्दू धर्म की बुनियाद सब प्रानियों के अन्दर एक ही ईश्वर का वजूद है पर हिन्दू धर्म से बढ़कर ऊंच नीच और छुआछूत शायद दुनिया के किसी धर्म में नहीं मानी जाती. महात्मा बुद्ध से ज़ियादा मूर्तिपूजा का खन्डन किसी दूसरे महा-पुरुष ने नहीं किया पर ख़ुद बुद्ध की मूर्तियों से ज़ियादा मूर्तियां भी दुनिया में किसी की न बनीं, न पुजीं; यहां तक कि ख़ुद 'बुत' शब्द ही 'बुद्ध' से बिगड़ कर बना है. हज़रत ईसा ने सब से ज़ियादा अहिंसा का उपदेश दिया पर उनके पीछे चलने वाली ईसाई क़ौमों से बढ़कर इन्सानों का ख़ून किसी दूसरे मज़हब वालों ने नहीं बहाया. मोहम्मद साहब ने क़ब्र पूजने ही को नहीं, अपने किसी प्यारे की भी क़ब्र बनाने तक को गुनाह बताया है, पर मुसलमान से ज़ियादा क़ब्रों की पूजा किसी

मज़हब के लोग नहीं करते. और मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है. किसी भी मज़हब को उस मज़हब से बाहर के लोग न गिरा सकते हैं, न नीचा दिखा सकते हैं और न नुक़सान पहुँचा सकते हैं. हर मज़हब को गिराने, नीचा दिखाने या नुक़सान पहुंचाने का काम हमेशा उस मज़हब के नामलेवा और उसका दम भरने वाले ही करते रहे हैं.

बात यह है कि बुनियादी सचाइयां सब मज़हबों में एक हैं. ईश्वर अल्लाह एक है, चाहे उसे किसी नाम से पुकारो. सब आदमी भाई भाई हैं. इस दुनिया में और उस दुनिया में हमारा सबका भला नेकी, सचाई, इन्साफ़ ईमानदारी और एक दूसरे की भलाई के उन असूलों पर अमल करने में है जो आदमी ने लाखों बरस के कड़वे तजरबों से सीखे हैं और जो सब मज़हबों की किताबों में पाए जाते हैं. फ़रक़ पैदा होता है उन छोटी मोटी मानताओं, हठधर्मियों, रीति रिवाजों, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीक़ों और ऊपरी अलामतों में, जो देश, काल और हालात की बिना पर अलग अलग मज़हबों में अलग अलग शकलें ले लेते हैं. मज़हब में झगड़े तभी होते हैं जब इन मज़हबों के मानने वाले ज़िन्दगी के असल असूलों और बुनियादी सचाइयों को कम ज़रूरी और इन सब ऊपर की चीजों को ज़ियादा ज़रूरी मानने लगते हैं. हम मज़हबी रूह या आत्मा को अलग करके उसके मुर्दा जिस्म को चिपटे रहना चाहते हैं, जिसका क़ुदरती नतीजा है बीमारी और मौत.

## सुधार की कोशिशें

१५ वीं सदी के शुरू में इस देश में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की क़रीब क़रीब यही हालत हो चुकी थी. ऐसे मौक़ों पर ही सुधारकों या फिर से राह दिखाने वालों की ज़रूरत पड़ती है. चुनांचे १५ वीं, १६ वीं और १७ वीं सदी में इस देश के अन्दर कबीर, नानक, दादू, बुल्लेशाह, यारी साहब, दरिया साहब, रैदास, तुकाराम, बाबा फ़रीद, पीपा, सदना, मुईनुद्दीन चिश्ती, निज़ामुद्दीन औलिया, बाबा मलूकदास,

जैसे बहुत से हिन्दू और मुसलमान सूफ़ी, सन्त, महात्मा और फ़क़ीर, ईश्वर के सच्चे भक्त पैदा हुए, जिन्होंने हमें मज़हब की ऊपरी चीज़ों और रीति रिवाजों से हटाकर बुनियादी असूलों की तरफ़ ले जाना चाहा, जिन्होंने हमें सब धर्म मज़हबों की बुनियादी एकता का पाठ पढ़ाया. हमें बताया कि असली धर्म या मज़हब एक है. दोनों मज़हबों की कुरीतियों, तंग नज़रियों और कुचालों पर खुले हमले किये और एक बार इस देश में प्रेम के वह सोते बहाये जिनके सामने बड़े बड़े बादशाहों को भी सर झुकाना पड़ा. हम यहां इन महापुरुषों के दर्शाये हुए प्रेम धर्म, मज़हबे इश्क़, मानव धर्म या मज़हबे इन्सानियत का ज़ियादा बखान नहीं कर सकते. यूं तो इस देश का बच्चा बच्चा इन महापुरुषों की बानी और उपदेशों से थोड़ी बहुत जानकारी रखता है. नीचे हम इनके कुछ क़ौल बतौर नमूने के दे देना चाहते हैं.

अपने ज़माने के हिन्दू, मुसलमानों की झूटी बहसों की तरफ़ इशारा करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

भाई रे ! दुई जगदीश कहां ते आया, कहो कौने भरमाया
अल्लाह, राम, करीमा, केशो, हरि, हज़रत नाम धराया
गहना एक कनक ते गहना, इन मंह भाव न दूजा
कहन सुनन को दोऊकर थापे, इक नमाज इक पूजा

मन्दिर और मस्जिद के फ़रक़ को बयान करते हुए कबीर साहब ने कहा है—

जो खुदाय महजीद बसतु है, अवर मुलक केहि केरा
तीरथ मूरत राम निवासी, दुई मँह किनहुं न हेरा
पूरब दिसा हरि को बासा, पच्छिम अलह मुकामा
दिल मँह खोज दिलहि मँह खोजो, इहे करीमा रामा
वेद कतेब कहो किन झूटा, झूटा जो न बिचारे
सब घट एक एक कर जाने, वे दूजा केहिं मारे

जेते औरत मर्द उपाने सो सब रूप तुम्हारा
कबीर पोंगरा अलह राम का, सो गुरु पीर हमारा

दादू ने कहा है—

अलह राम छूटा भ्रम मोरा
हिन्दू तुरक भेद कुछ नाहीं, देखौं दरसन तोरा

..................

सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन
सब घट एकै आतमा, क्या हिन्दू मुसलमान

..................

दोनों भाई हाथ पग, दोनों भाई कान
दोनों भाई नैन हैं हिन्दू मुसलमान

मन्दिर और मस्जिद के बारे में दादू ने कहा है—

आप चिणावे देहुरा, तिसका करहि जतन
परतखि परमेसुर किया सो माने जीव रतन
मसीत सँवारी मारा सों तिसकूं करै सलाम
ऐन आप पैदा किया सो ढावें मुसलमान

(यानी जिस मन्दिर को हिन्दू अपने हाथों से चुनते हैं उसकी तो बड़ी देख रेख करते हैं, पर आदमी का बदन जो ख़ुद ईश्वर का बनाया हुआ मन्दिर है, उसे तोड़ डालते हैं. इसी तरह मुसलमान आदमी की बनाई हुई मस्जिद की तो इज़्ज़त करते हैं और ख़ुद ख़ुदा की बनाई हुई इमारत यानी आदमी के बदन को ढा देते हैं)

इसी तरह के ख़याल उस ज़माने के मुसलमान सूफ़ियों और फ़क़ीरों के कलाम में भरे पड़े हैं. एक सूफ़ी का कहना है—

दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त
काबा बुनगाहे ख़लीले आज़र अस्त
दिल गुज़र गाहे जलीले अकबरस्त

यानी—किसी का दिल, उसका भला करके अपने हाथ में ले. यही सब से बड़ा हज्ज है. हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है. यह पत्थर का काबा आज़र के बेटे ख़लील का बनाया हुआ है और आदमी का दिल ख़ुद उस परमेश्वर के आने जाने की जगह है.

शेख़ सादी ने कहा है—

चु अज़ दर्द आज़ाद करदी कसे
बेह अज़ अल्फ़ रकअतबहर मंज़िले

यानी अगर तू किसी एक आदमी की तकलीफ़ को भी दूर करदे तो यह ज़ियादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज्ज को जाय और रास्ते के हर पड़ाव में एक एक हज़ार रकत नमाज़ पढ़ता जाय

इसलाम के ऊपरी रीति रिवाजों से घबरा कर एक और सूफ़ी का कहना है—

मय ख़ुरो मुसहफ़ बेसोज़ो आतिश अन्दर काबाज़न
हरचे ख़ाही कुन व लेकिन मर्दु म आज़ादी मकुन

यानी शराब पी, किताब जला दे, काबे में आग लगा दे, जो तेरे दिल में आये सो कर, सिर्फ़ एक काम न कर—किसी का दिल न दुखा.

सच यह है कि यही इसलाम की चोटी का फूल है. यही ऊंचे से ऊंचा दीन, धर्म या मज़हब है. यही उपनिषदों, गीता और क़ुरान का निचोड़ है. इसका मतलब यह नहीं कि सूफ़ी किसी को शराब पीने या क़ुरान जलाने या काबे में आग लगाने का उपदेश देता है. वह सिर्फ़ मज़हब की ऊपरी चीज़ों से हटाकर मज़हब के जौहर की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता है. ज़ाहिर है कि जो आदमी इस बात का ध्यान रक्खेगा कि उसके किसी काम से किसी आदमी का दिल न दुखे, वह न कभी शराब पी सकता है, न किसी धर्म की किताब को जला सकता है और न किसी मन्दिर, मस्जिद काबे, या काशी को आग लगा सकता है.

हिन्दुस्तान के मशहूर मुस्लिम सन्त अमीर खुसरो का मशहूर शेर है-

काफ़िरे इश्कम मुसलमानीमरा दरकार नेस्त
हरके मन तार गश्ता हाजते ज़ुन्नार नेस्त

यानी मैं प्रेम का पुजारी हूं. मुझे तुम्हारे ऊपरी इसलाम की ज़रूरत नहीं है. प्रेम ने मेरी रग रग को तार तार कर दिया है, मुझे तुम्हारे ऊपरी धागों के जनेऊ की ज़रूरत नहीं.

इस तरह के क़ौल उस ज़माने के सूफ़ियों की बानी में भरे पड़े हैं. यह प्रेम के मतवाले हिन्दू मुसलमान को अलग अलग करने वाली दीवारों को तोड़ कर उनसे ऊपर उठ चुके थे और दुनिया को उठाना चाहते थे, या यूं कहिये कि दुनिया को सच्चे हिन्दू धर्म और सच्चे इसलाम की तरफ़ लाना चाहते थे. रीति रिवाजों के पुजारी तंग नज़र लोग जब इनसे सवाल करते थे तो यह जवाब देते थे—

तूही बता दे, ज़ाहिद ! क्या कहूँ मैं अपने को
तू कहे गब्र मुझे, गब्र मुसलमां मुझ को

ऐ रीति रिवाज के पुजारी मुसलमान ! तू ही बता दे मैं अपने को क्या कहूं, तू कहता है मैं हिन्दू हो गया और हिन्दू कहता है कि मैं मुसलमान हूं.

धर्म मज़हब के मामले में आज हमारी मुसीबतों की सबसे बड़ी जड़ यह है कि वह हिन्दू बड़े और छोटे भी अपने धर्म और धर्म की किताबों से नावाक़िफ़ हैं और वह मुसलमान जो अपने ईमान और अमल दोनों में इसलाम से काफ़ी दूर हैं. आज हिन्दू धर्म के रक्षक और इसलाम के मोहाफ़िज़ बने हुए हैं. यही वजह है कि हम ग़लत क़िस्म की राजकाजी दलबन्दियों के चक्कर में पड़कर ग़ैरों के बिछाए हुए जाल में फँसे हैं, फँसते जा रहे हैं, खुद अपनी बेड़ियों को अपने हाथों से कस रहे हैं, और देश और धर्म दोनों को मिट्टी में मिला रहे हैं.

# सिख धर्म

धर्म के मामले में हमारे अनजानपन की तो यह हालत होगई है कि वह सिख धर्म जिसका जन्म ही इस देश में इसलाम के आने के बाद हुआ और जो हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के संगम के रूप में दोनों को मिलाने के लिये आया था, आज अपनी अलग गंगा बहा बैठा. गुरु नानक से से लेकर गुरु गोबिन्द सिंह तक सब गुरुओं की बानी को पढ़ जाइये. आपको उनमें एक ही सर्व-धर्म-समभाव, सब धर्मों के मेल और एकता की बात दिखाई देगी. आदि ग्रन्थ और दशम ग्रन्थ दोनों इस प्रेम के अमृत से भरे पड़े हैं. गुरु नानक ने अपने को हिन्दू कहने से साफ इन्कार किया.

उनके शब्द हैं—

ना हम हिन्दू ना हम मुसलमाँ
दोनों विच्च बसे शैतान
एकै, एकी एक सुभान
तग्ग न हिन्दू पाइया
तग्ग न मूसलमान
दोऊ भूले राह ते
ग़ालिब भया शैतान
बन्दे इक्क ख़ुदाय दे
हिन्दू मूसलमान
दावा राम रसूल कर
लड़दे बेईमान

गुरु नानक की बानी में यह थोड़ा सा कड़वापन प्रेम का कड़वापन है. अपने ज़माने के रीति-रिवाज के जंजाल और शब्दों और नाम रूप की बहस में फँसे हुए हिन्दु मुसलमानों की हालत से दुखी होकर यह शब्द उनके मुख से निकले. आज ऐसे सिक्ख भाई भी हैं जो महात्मा गांधी की प्रार्थना में क़ुरान के पढ़े जाने पर अल्लाह नाम आने

पर नाराज़ होते थे. उन्हें शायद यह भी ध्यान नहीं कि गुरु ग्रन्थ साहब अल्लाह नाम से शुरू होता है. और भगवान के लिये अल्लाह नाम ग्रन्थ साहब में बार बार और जगह आया है—

अव्वल अल्लह नूर उपाया
कुदरत दे सब बन्दे
इक्कनूर ते सब जग उपज्या
कौन भले कौन मन्दे

आदि ग्रन्थ में सिक्ख गुरुओं की बानी के अलावा अनेक सन्तों और कम से कम चार मुसलमान सन्तों की बानी प्रेम के साथ जमा की गई हैं. गुरु अर्जुन देव को जब अमृतसर के गुरुद्वारे की नींव रखने की ज़रूरत पड़ी तो उन्होंने इस पाक काम के लिये मुसलमान फ़कीर साईं मियां मीर से प्रार्थना की. गुरुद्वारे की नींव साईं मियां मीर ही के हाथों की रखी हुई है. सब धर्मों की एकता की यह भावना जिस तरह आदि ग्रन्थ में है ठीक उसी तरह दशम ग्रन्थ में है. इस बारे में गुरु नानक और गुरु गोबिन्दसिंह के विचारों में कोई फ़रक़ नहीं.

गुरु गोबिन्द सिंह का मशहूर पद है—

कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो
कोऊ ब्रह्मचारी' कोऊ जतियन मानबो
हिन्दू तुरक कोऊ, राफ़ज़ी, इमाम शाफ़ी
मानस की जाति सबै इक्कै पहचानबो
करता करीम सोई, राज़िक़ रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई, भूल भ्रम मानबो
एक ही की सेव, सबही को गुरुदेव एक
एक ही सरूप, सबै एकै जोत जानबो
देहुरा मसीत सोई, पूजा और नमाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को प्रभाव है
देवता अदेव जच्छ गन्धर्व तुरक हिन्दू
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है

एक नैन एकै कान एकै देह एकै बानी
ख़ाक बाद आतिश औ आब को रलाव है
अल्लाह अभेद सोई, पुरान औ क़ुरान ओई
एक ही सरूप सबै, एक ही बनाव है

हमें विश्वास है कि अगर पंजाब, बल्कि सारा हिन्दुस्तान, सिर्फ़ गुरु नानक ही की बताई हुई राह पर चला होता, तो आज इस देश में मज़हब के नाम पर इन्सानियत को शरमा देने वाले पापों और अपने हाथों इस बरबादी का बाज़ार गरम न हुआ होता. उपनिषदों का 'अद्वैतवाद' पुराणों का 'विष्णु सहस्त्रनाम'--जिस में सहस्त्र के मानी है बेअन्त, कबीर साहब का 'कबीर पोंगरा अलह राम का', गुरु नानक का 'अव्वल अल्लाह नूर उपाया' और महात्मा गांधी का 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम' सब एक ही सनातन सचाई की गूंज हैं.

## कुछ अजीब विचार

आज हिन्दू धर्म के नाम पर कई अजीब अजीब तरह के विचार हम में चल पड़े हैं. कुछ भाई कहने लगे हैं कि जिन लोगों के तीर्थ स्थान यानी पाक मुक़ाम इस देश से बाहर हैं या जो बाहर के किसी महापुरुष या राह दिखाने वाले के पैरों हैं, वह इस देश के बराबर के हक़दार शहरी नहीं हो सकते. जो लोग 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मानने वाले थे, यानी जो इस सारी धरती को अपना घर और इस धरती के रहने वालों को अपना कुटुम्ब मानते थे, उनके अन्दर यह तंगी हमारी गिरावट की बड़ी दर्दनाक अलामत है, अगर दुनियां के सब देश इसी तंग असूल के मानने वाले होते तो वह बौद्ध धर्म जिस के चलाने वाले महात्मा बुद्ध हिन्दुस्तान में पैदा हुए थे और जिसका सब से पाक स्थान गया इस देश में है, चीन, जापान, और आधी दुनिया में न फैल पाता और न कोई बौद्ध धर्म का मानने वाला वहां का हक़दार शहरी हो पाता. 'मित्र धर्म' ने जिसकी जड़ें ऋग्वेद के देवता 'मित्र'

की पूजा में थी, एक समय सारे पच्छिमी एशिया और आधे से ज़ियादा यूरोप को अपने घेरे में ले रखा था. हज़रत ईसा एशिया में पैदा हुए, यहीं उनकी सारी उमर बीती, एशिया ही में ईसाइयों का सबसे पाक तीर्थ है, इस बिना न पर कभी यूरोप या अमरीका के देशों से ईसाई निकाले गए, न निकाले जा सकते हैं. दुनिया का कोई देश सभ्य, मुहज़्ज़ब या 'सिविलाइज्ड' कहलाने का हक़दार नहीं है, जिसमें पूरी मज़हबी आज़ादी नहीं, यानी हर आदमी को हर वक़्त यह अधिकार न हो कि वह जिस धर्म को चाहे माने और जिस तरह चाहे अपने भगवान की पूजा करे या न करे. हिन्दुस्तान इन मानों में हमेशा एक सभ्य देश रहा है और रहेगा. यह अलग बात है कि जो जिस देश में रहे. उस देश का सदा भला सोचना उसका फ़र्ज़ है. जो भी किसी देश में रह कर वहाँ के किसी नियम क़ानून को तोड़ेगा, उसे अपने किये को भुगतना होगा, चाहे वह उस देश के पैदा हुए किसी धर्म का मानने वाला हो और चाहे बाहर के पैदा हुए किसी धर्म का.

## संस्कृति का सही रूप

सभ्यता या तहज़ीब की बात आई, तो हमारा ध्यान एक और चीज़ की तरफ़ जा रहा है. हमारे इस अभागे देश में ख़ास कर हाल के दिनों में हिन्दू संस्कृति या हिन्दू कलचर को बनाए रखने और मुस्लिम संस्कृति या मुस्लिम कलचर को बचाने के चरचे भी ख़ूब हो चुके हैं. हमें बड़े दुख और लज्जा के साथ कहना पड़ता है कि कहीं कहीं तो यह चरचे भी उन लोगों ने सबसे ज़ियादा किये जिनमें और कोई भी अच्छी या बुरी बात रही हो या न रही हो, कम से कम हिन्दू कलचर और मुस्लिम कलचर नाम की कोई भी चीज़ दिखाई नहीं देती थी.

कलचर का मज़मून भी इतना बड़ा है कि इस पर अलग किताब की ज़रूरत है और किताबें हैं. फिर भी संस्कृति और कलचर दोनो शब्दों की पैदाइश और उनकी बनावट से ज़ाहिर है कि संस्कृति और कलचर हमेशा दो चीज़ों के मेल से पैदा होती है. बाल्हू हिन्दू धर्म के अनुसार आदमी

संस्कार होने पर यानी कुछ ऐसे गुणों के मिलने पर, जो जन्म से उसमें नहीं होते थे, द्विज या द्विजन्मा कहलाता है. मामूली चूसने का आम बीजू आम कहलाता है, क़लमी आम कलचर्ड या कलचर हुआ आम कहा जाता है. यही बात ऐग्रीकलचर, हौर्टीकलचर, सैरीकलचर और तरह तरह की कलचरों में है. किसी भी देश की कलचर में उस देश वालों की धार्मिक और नैतिक ज़िन्दगी, उनका सदाचार, इख़लाक़, उनकी बोली-साहित्य, उनके रहने-सहने, उठने-बैठने के ढंग, उनके कपड़े, उनके मकान, उनके खेल तमाशे, उनके खाने पीने की चीज़ें, उन की चित्रकारी, उनकी दस्तकारियाँ, उनकी तबीयतों के शौक़ और झुकाव सब शामिल समझे जाते हैं.

मज़हब की तरह कलचर में भी दो मोटे पहलू होते हैं—एक बुनियादी असूल और दूसरे उन असूलों को रूप देने और ज़ाहिर करने वाले तौर तरीक़े और बाहरी चीज़ें. इन में असूल फिर सब कलचरों के एक दरजे तक एक हैं, एक होने चाहियें और जहाँ तक उन में फ़रक़ है उन सबको मिला कर दुनिया को एक इनसानी कलचर, मानव संस्कृति और सच्चे भाईचारे की तरफ़ जाना चाहिये. जहाँ तक तौर तरीक़ों और ऊपर की चीज़ों की बात है, इनमें देश, काल और हालत के साथ साथ फ़रक होना क़ुदरती चीज़ है. इस फ़रक़ में भी तीन बातें ध्यान देने की हैं. एक यह कि यह फ़रक़ मज़हब की बिना पर कम और मुल्क की बिना पर ज़ियादा होते हैं. कलचर के इन मानों में जितना फ़रक़ लाहौर के हिन्दू और बनारस के हिन्दू में है, इतना लाहौर के हिन्दू और लाहौर के मुसलमान में या बनारस के हिन्दू और बनारस के मुसलमान में नहीं है. दूसरे यह कि इन फ़रकों को अगर रवादारी, उदारता, प्रेम और ज़िन्दा दिली से देखा जावे, तो यह फ़रक़ इन्सानों की ज़िन्दगी के अमन और सुख को कम करने की जगह उन्हें बेहद बढ़ा देने का सामान बन सकते हैं. सारी इन्सानी क़ौम की ज़िन्दगी को यह वैसा ही मालामाल और ख़ुशहाल कर सकते हैं और उसकी शोभा को बढ़ा सकते हैं, जैसे एक बड़े बाग़ के अन्दर तरह तरह

के फल और रंगबिरंगे फूल. तीसरी यह कि इन ऊपरी चीज़ों में भी दुनिया मेल और संगम की तरफ़ जा रही है. इस तरह की चीज़ों और तौर तरीक़ों में सदा से देश देश के अन्दर वह क़लमें लगती रही हैं, जिन्होंने हर देश वालों की ज़िन्दगी को एक मिले जुले ताने बाने की तरह पूर रक्खा है और जिन में से अलग अलग देशों या क़ौमों की कलचरों को अलग अलग करने की कोशिश इस सारे ताने बाने को तार तार कर के बरबाद कर देने के बराबर होगी.

इन मानों में जो लोग हिन्दू कलचर और मुस्लिम कलचर को अलग अलग बचा कर रखने और अछूता रखने की बात करते हैं, उन्हें इस बात का शायद अन्दाज़ा नहीं है कि हिन्दुस्तानी समन्दर में गिर कर एक हो जाने वाली किसी समय की इन अलग अलग कलचरों, आर्य कलचर, द्रविड़ कलचर, यूनानी कलचर, ईरानी कलचर, चीनी कलचर, अरब कलचर, राजपूत कलचर, मुग़ल कलचर वग़ैरा का मेल जोल किस हद तक पहुंच चुका है. शुद्ध हिन्दू संस्कृति का दिलदादा कौन ऐसा आदमी होगा, जो गेहूं की फ़सल को और उसके इस्तेमाल को इसलिये देश से निकाल दे, क्योंकि गेहूं आज से लगभग २३ सौ बरस पहले यूनानियों के साथ हिन्दुस्तान आया था ? ऋग्वेद में तिल, चावल, जौ का बयान मिलता है, गेहूँ का नहीं. गेहूं उन दिनों आर्य लोगों का खाना नहीं था. गेहूं के संस्कृत नामों में से दो नाम 'यवन प्रिय' और 'म्लेच्छ प्रिय' भी हैं. जो कपड़े हम आजकल पहन रहे हैं या जो पचास बरस पहले पहनते थे, सब मुल्क मुल्क और क़ौम क़ौम के पैबन्दों से बने हैं. संस्कृत की पुरानी किताबों में उन कपड़ों का बयान मिलता है, जो महर्षि वाल्मीक के समय में या महाभारत के समय में या और समय समय पर इस देश में पहने जाते थे. आज उनमें से बहुत से कपड़ों को कोई हिन्दू मर्द पहन कर घर से बाहर निकलने की ढिठाई नहीं कर सकता. कौन समझदार हिन्दू गुलाब की क्यारियों को अपने बगीचे से इसलिये नोच कर फेंक देगा,

क्योंकि गुलाब की क़लम मुग़लों के ज़माने में ईरान से आई थी ? यही हालत हमारे सैंकड़ों सुन्दर से सुन्दर, मीठे से मीठे और प्यारे से प्यारे फलों, फूलों, जानवरों और आये दिन के बरतने की चीज़ों की है. ऐसे ही कौन मुसलमान होगा, जो इसलिये पान चबाना या क़लाक़न्द खाना बन्द कर दे, क्योंकि यह दोनों चीज़ें हिन्दुस्तानी हैं, अरब, ईरान या किसी बाहर के मुस्लिम देश में नहीं होतीं और अरबों, तुर्कों और मुग़लों ने हिन्दुस्तान में आकर इनका इस्तेमाल सीखा. इस तरह की अनगिनत मिसालें हमारी ज़िन्दगी में भरी पड़ी हैं.

इन आये दिन की चीज़ों से लेकर अगर हम कला, चित्रकारी, तरह तरह की दस्तकारी, संगीत और साहित्य, यहां तक कि धार्मिक समझे जाने वाले रीति रिवाजों पर निगाह डालें, तो हमें इस मेल जोल की इससे भी ज़ियादा शानदार मिसालें क़दम क़दम पर मिलेंगी. हम यहां सिर्फ़ एक ठोस मिसाल देकर बस करेंगे. तामीर का हुनर यानी मकान के बनाने में सुन्दरता लाने की कला आदमी के शौक़ की ख़ास चीज़ों में से है. इन सब चीज़ों में फ़रक़ मुल्कों मुल्कों ही के होते हैं, मज़हबों के नहीं. कलचर को भी अगर ध्यान से देखा जावे, तो हिन्दुस्तानी कलचर, ईरानी कलचर, यूनानी कलचर और अरब कलचर के कुछ मानी हैं, हिन्दू कलचर और मुस्लिम कलचर नाम की इस मानी में कोई चीज़ नहीं. अक्सर हम पुरानी हिन्दुस्तानी कलचर को हिन्दू कलचर और पुरानी अरब कलचर को मुस्लिम कलचर कह बैठते हैं. घर बनाने की कला में इस निगाह से अगर हमें हिन्दू कलचर के अच्छे से अच्छे नमूने देखने हों, तो दक्खिन के पुराने मन्दिर, कुर्सी के ऊपर कुर्सी, कंगूरे के ऊपर कंगूरा, ऊंचा कलश, धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों के नक़शे चारों तरफ़, ऊपर से नीचे तक इस तरह घने खुदे हुए कि जिन्हें देखकर आदमी को तुरन्त हिन्दुस्तान के घने बनों और वहां की घनी आबादी की याद आ जावे. दूसरी तरफ़ अगर मुस्लिम कलचर या अरब कलचर के अच्छे से अच्छे नमूने देखने हों, तो दिल्ली और अजमेर

की मस्जिदें, आसमान से बात करती हुई मीनारें, भारी गोल गुम्बद, अनगिनत महराबें, और अन्दर बाहर का तमाम हिस्सा अरब के रेगिस्तान की तरह साफ चट. तीसरी तरफ़ अगर इन दोनों कलचरों, इन दोनों संस्कृति के आदर्शों के प्रेमालिंगन, उनके बगलगीर होने को देखना हो, तो आगरे का ताज है, जो अपनी कला और अपनी सुन्दरता की निगाह से आज भी दुनिया के कलाकारों को चकाचौंध कर रहा है और इस देश के जर्जर बदन पर झूमर की तरह चमक रहा है. इसीतरह बेशुमार की प्यारी मिसालें हमें अपने संगीत, अपनी चित्रकला और ज़िन्दगी के दूसरे अच्छे से अच्छे पहलुओं में मिलेंगी. सच यह है कि इन सब चीज़ों में दुनियां एक आलमगीर आर्ट, एक विश्व कलचर और उस मिली जुली ज़िन्दगी की तरफ़ जा रही है, जिस पर दुनिया के सब धर्मों, सब विद्याओं और सब महापुरुषों की टिकटकी लगी हुई है, और जिसके बिना "वसुधैव कुटुम्बकम्" यानी दुनिया के सब इन्सानों को एक खानदान बनाने का सपना पूरा नहीं हो सकता. इस धरती के ऊपर इस सपने को पूरा करना ही सारे धर्म, मज़हब, कलचर और संस्कृति का लक्ष या मक़सद है. इसके खिलाफ़ जाने की सारी कोशिशें आदमी आदमी में फूट डालने वाली, बरबादी करने वाली और पाप हैं.

इसके लिये सब से पहली ज़रूरत है एक दूसरे के साथ पूरी रवादारी, विचारों, मानताओं और पूजा पाठ के तरीक़ों में सब के लिये पूरी आज़ादी, सबके साथ इन्साफ़ और इन्सानी भाई चारे की जड़ों को मज़बूत करने की. इसके बिना धर्म, कलचर या संस्कृति का दुनिया में फल-फूल सकना नामुमकिन है. हमारे देश के हिन्दू मुसलमान, सिक्ख और सब भाइयों को भी संस्कृति या कलचर के मामले में इसी ध्येय या मक़सद को हर वक़्त अपने सामने रखना चाहिये.

# इतिहासी पहलू

आखिर में हम इस सारे सवाल के तीसरे पहलू यानी उन इतिहासी ग़लतफ़हमियों की तरफ़ आते हैं, जो हमारी इस सारी बीमारी की एक दरजे तक जड़ हैं.

## इतिहास की तोड़-मरोड़

पिछले सौ सवा सौ बरस से जो जो तरीक़े इस देश में फूट फैलाने के हमारे विदेशी अंगरेज़ी हाकिमों ने ईजाद किये और बरते उनमें सब से ज़बरदस्त तरीक़ा हमारे पिछले इतिहास को तोड़ मोड़ कर और ग़लत रंग देकर हमारे सामने रखना है. पिछली तीन पीढ़ियों से हिन्दुस्तान की जो तारीख़ हमारे स्कूलों और कालिजों में पढ़ाई जाती रही है, उसने हिन्दू और मुसलमान बच्चों के दिलों में एक दूसरे से नफ़रत के वह बीज बोए हैं जिनसे धीरे धीरे फूलते फलते अंगरेज़ी कूटचालों की मदद से आज इस देश में यह नौबत पहुँच गई है. यहां हम केवल दो एक मिसालें देंगे. मशहूर और माने हुए इतिहास लेखक सर जानके ने लिखा है—

"हम लोगों में यह रिवाज है कि जब किसी देसी राजा, महाराज या नवाब का राज हम उससे छीन लेते हैं, तो उसके बाद उस पर या उस आदमी पर जो उसके बाद उसकी गद्दी पर बैठने वाला था,

झूठे कलंक लगाकर उन्हें बदनाम करते है. ( हिस्ट्री ऑफ दी सेपौय वार, जिल्द ३ पृष्ठ ३६१—३६२ ).

जिस सिराजुद्दौला ने अपने नाना अलीवार्दी खां की आखरी वसीयत पर चल कर तख्त पर बैठने के दिन से मरने की घड़ी तक कभी शराब को हाथ न लगाया था× और जिसके पाक चलन की उस समय के स्क्रेफ्टन जैसे बहुत से अंगरेज़ लेखक दिल से तारीफ़ करते हैं, उसे बाद भी अंगरेज़ी किताबों में पहले दरजे का शराबी और दुराचारी बयान किया गया है.

इतिहासकार बेवरिज ने झांसी की उस महारानी लक्ष्मीबाई की, जिसकी पाक ज़िन्दगी और ऊंचे चरित्र की उस ज़माने के बड़े छोटे सब अंगरेज़ लेखक एक आवाज़ से तारीफ़ करते हैं और जो एक आदर्श हिन्दू बेवा थी, अपनी किताब हिन्दुस्तान के इतिहास में जो तस्वीर खींची है, उसमें महारानी लक्ष्मीबाई को शराब और हुक्के का आदी दिखाया गया है.

सिन्ध का जो अमीर मीर रूस्तम खां ८५ साल से ऊपर उमर पाकर अंगरेज़ों की पूना जेल में मरा और जिसकी परहेज़गारी, पाक ज़िन्दगी और नेकचलनी की उन सब अंगरेज़ अफ़सरों ने पूरी तरह तारीफ़ की है, जिन्हें कभी उसके साथ रहने का मौका मिला, जिसकी बाबत पूना का अंगरेज़ सिविल सर्जन डा० पियर्ट लिखता है कि "मीर रूस्तम खां ने सिवा पानी या दूध के कभी और कोई चीज़ नहीं पी", उसे "दी कान्क्वेस्ट आफ सिन्ध" नाम की मशहूर किताब के लेखक सर विलियम नेपियर ने अपनी किताब में शराबी, भंगेड़ी और अय्याश बयान किया है.

हम यहां इस तरह की मिसालों को बढ़ाना नहीं चाहते. मीर क़ासिम, हैदरअली, टीपू सुलतान, नन्द कुमार, वाजिदअली शाह, पेशवा बाजीराव, जसवन्तराव होलकर रनजीतसिंह वग़ैरा सबके साथ यही बेइन्साफ़ी की गई

---

×"बांगलार इतिहास, नवाबी आयल" लेखक—कालीप्रसन्न वन्द्योपाध्याय

है. इस बेइन्साफ़ी की वजह से एक तरफ़ तो हम अपने उन बहादुर देश भक्तों और देश के सेवकों की क़द्र न कर सके, जिन्होंने इस देश की आज़ादी के लिये समय समय पर कोशिशें कीं और जानें दीं. दूसरे इन झूटे बयानों ने हिन्दुओं और मुसलमानों के दिलों को भी एक दूसरे से फाड़ा.

इससे कहीं ज़ियादा ज़हर मुस्लिम ज़माने की ग़लत और यकतरफ़ा तारीख़ हमारे सामने रख कर हम में एक दूसरे के ख़िलाफ़ फैलाया गया. हम यह नहीं कहते कि मुसलमान बादशाहों ने अत्याचार नही किये. हम यह भी नहीं कहते कि सब मुसलामन बादशाह या हाकिम मज़हबी तास्सुब से ऊपर थे. हम इतिहास के किसी ज़ुल्म या ग़लती को ढकना या छिपाना नहीं चाहते. पर जो इतिहास हमें पढ़ाया गया है, उसमें इस तरह के ज़ुल्मों और ग़लतियों को बढ़ा कर और रंग कर बयान किया गया है और आपस के अच्छे बरताव और मेल जोल के पहलुओं को दबाया गया है.

## औरंगज़ेब

सब से ज़ियादा बदनाम मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब ही को लीजिये. औरंगज़ेब से ग़लतियां हुईं. एक बड़े दरजे तक उन का ग़लतियों ही की बदौलत मुग़ल राज के टुकड़े टुकड़े होकर उसका ख़ात्मा हुआ और इस मुल्क को ग़ैरों की ग़ुलामी के कड़वे तजरबे में से निकलना पड़ा. हम यहां इन ग़लतियों की तफ़सील में नहीं जा सकते. हम सिर्फ़ एक दो मोटी मोटी बातों की तरफ़ पढ़ने वालों का ध्यान खींचना चाहते हैं. जिस औरंगज़ेब ने मथुरा, अयोध्या और बनारस के तीन मशहूर मन्दिर गिरवाए, उसी औरंगज़ेब ने बीजापुर की शानदार जामा मस्जिद को इसलिये अपने सामने खड़े होकर एक एक ईंट निकलवा कर ज़मीन से मिलवा दिया था, क्योंकि सम्राट के मुसलमान बाग़ियों ने लड़ते लड़ते मस्जिद के अन्दर पनाह ले ली थी. वजह दोनों सूरतों में राजकाजी थी, मज़हबी नहीं. स्कूलों और कालिजों की किताबों में हमें यह कहीं नहीं बताया जाता कि सारे उत्तर हिन्दुस्तान

में जगह जगह बेशुमार मन्दिर हैं, जिनके पुजारियों के पास औरंगज़ेब की मन्दिरों के नाम दी हुई जागीरों के फ़रमान अभी तक मौजूद हैं. इलाहाबाद में जमुना के उस पार सोमेश्वरनाथ का मन्दिर और काशी में जंगमबाड़ी का मन्दिर इसी तरह के दो बड़े मन्दिर हैं, औरंगजेब के दरबार में काफ़ी ऊंची पदवियां भी हिन्दुओं को मिली हुई थीं. उसका अर्थ-सचिव यानी वज़ीर मालियात क़रीब क़रीब हमेशा हिन्दू रहा. अफ़ग़ानिस्तान को जीत कर उसने एक हिन्दू को वहां का गवर्नर बना कर दिल्ली से भेजा. औरंगज़ेब के छपे हुए खतों में दो खत हैं, जिन में से एक में दिल्ली के एक मुसलमान दरबारी ने सम्राट को लिखा कि आप के यहां फ़लाँ मुहक़मे में दो ज़िम्मेदारी के ओहदे फ़लाँ फ़लाँ बुतपरस्तों के मिले हुए हैं, शायद आपको उन दोनों ओहदों के लिये कोई ठीक मुसलमान न मिले होंगे, मेरे दो लड़के दो छोटे ओहदों पर काम कर रहे हैं, आप के वफ़ादार हैं. मेरी दरख्वास्त है कि दोनों बुतपरस्तों को हटाकर अपने इन गुलामज़ादों को उनकी जगह मुक़र्रर कर दीजिये वग़ैरा. खत लिखने वाले ने अपनी बात को मज़बूत करने के लिये क़ुरान की एक आयत नक़ल की, जिसमें ख़ास हालतों में अरब के ग़ैरमुसलमान से व्यवहार करने को मना किया गया था. जो खत औरंगज़ेब ने इस खत के जवाब में लिखा, वह बहुत साफ़ और शानदार है. औरंगज़ेब ने जवाब दिया—मुझे मालूम है कि इन दो ज़िम्मेदार ओहदों पर दो ग़ैरमुस्लिमान नौकर हैं. इसकी वजह यह नहीं है कि मुझे कोई मुसलमान उन कामों के लिये नहीं मिल सके, बल्कि वजह यह है कि मेरे ख़याल में किसी मुसलमान बादशाह को नौकरियों के देने के मामले में अपनी रिआया के अन्दर से मज़हब के फ़रक़ के ख़याल को मन में नहीं लाना चाहिये, इसलिये आपकी दरख्वास्त मंज़ूर नहीं की जा सकती. इस खत में औरंगज़ेब ने यह भी लिखा कि मुसलमान अर्ज़ी देने वाले ने क़ुरान की आयत को ग़लत समझा और एक और आयत नक़ल की, जिस का मतलब है कि "हर आदमी को इन्साफ करना चाहिये, चाहे वह इन्साफ उसके अपने मां बाप या पास के नातेदारों के खिलाफ़ ही क्यों न जाता हो."

हमारी इतिहास की किताबों में हमें यह नहीं बताया जाता कि सम्राट अकबर से लेकर लगभग तीन सौ बरस तक गोकुशी मुग़लों के राज्य में क़ानूनी जुर्म था, जिसकी सज़ा में जुर्म करने वाले के दोनों हाथ काट दिये थे. इन तीन सौ बरस में औरंगज़ेब के पचास बरस भी शामिल थे. इन पचास बरस के अन्दर या उनके आगे पीछे दिल्ली के क़िले या शाही महलों में कभी गो मांस इस्तेमाल नहीं किया गया, जिससे किसी हिन्दू का दिल दुखे.

अपने परदादा अकबर की चलाई रीति को जारी रखते हुए औरंगज़ेब हमेशा गंगाजल पीता था. इसलिये नहीं कि वह उसे मज़हबी तौर पर पाक मानता था, बल्कि इसलिये कि हकीमों ने उसे बताया था कि गंगाजल तन्दुरुस्ती के लिए मुफ़ीद है और मौलवियों ने भी यह फ़तवा दे दिया था गंगा जल पीने में इस्लाम के असूल के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं.

हमें तारीख़ में औरंगज़ेब के हुक्म से गुरु तेग़बहादुर की हत्या का तो हाल बताया जाता है, पर यह नहीं बताया जाता कि उसी औरंगज़ेब ने दिल्ली के मशहूर मुसलमान सन्त सरमद को भी सामने बुलवा कर क़त्ल करवा दिया था. सरमद उपनिषदों और क़ुरान दोनों का एक बराबर प्रेमी था. उसके फ़क़ीरी दरबार में हिन्दुस्तान के बड़े बड़े राजे महाराजे नवाब, और हिन्दू मुसलमान रईस दोनों आकर जमा हुआ करते थे. वजह दोनों सूरतों में एक ही थी. गुरु तेग़बहादुर और सरमद दोनों दिल से दारा के तरफ़दार थे, जिससे लड़कर और जिसे क़त्ल करके औरंगज़ेब तख़्त पर बैठा था. हिन्दू हो या मुसलमान दारा के बड़े बड़े तरफ़दारों को अपने रास्ते से हटा देना औरंगज़ेब के लिये एक राजकाजी ज़रूरत थी.

हम ऊपर लिख चुके हैं कि हम यह नहीं कहते कि औरंगज़ेब ने या किसी भी हिन्दू या मुसलमान राजा या बादशाह ने ग़लतियां या ज़ियादतियां नहीं कीं. हमारा कहना सिर्फ़ यह है कि अगर उस ज़माने के हिन्दू मुसलमानों के लड़ाई झगड़ों और मेल मिलाप की अच्छी और बुरी बातें ठीक ठीक हमारे समाने रक्खी जावें, तो एक दूसरे की तरफ़ हमारे

दिलों की हालत बिल्कुल बदल जावे. अब हमारी हालत तो यह है कि शायद हज़ारों हिन्दू ऐसे हैं कि जिन्हें कहानियों की तरह सुन सुन कर इस बात का यक़ीन है कि सम्राट औरंगज़ेब सवा मन जनेऊ रोज़ कटवा कर, यानी इतने हिन्दुओं को मुसलमान बना कर, सुबह का नाश्ता किया करता था. हम अपने भोलेपन और अपनी तंगनज़री में यह भी नहीं सोचते कि एक चोटी या एक जनेऊ का वज़न कितना होता है, सवा मन में कितने जनेऊ या कितनी चोटियां होनी चाहियें और साल में कितने दिन होते हैं. औरंगज़ेब पचास बरस तख़्त पर रहा. ज़ाहिर है कि अगर सारी दुनियां के आदमी भी हिन्दू होते और सब इस काम के लिये बुला लिये गये होते, तो भी औरंगज़ेब को पचास बरस तक नाश्ता मिलने के लिये वह काफ़ी न होते. हम यह भी नहीं सोचते कि दिल्ली औरंगज़ेब की राजधानी थी. उस सारे ज़माने में दिल्ली शहर की आधी के क़रीब आबादी हमेशा हिन्दू रही और ख़ुशहाल और इज़्ज़तदार हिन्दू. दिल्ली के चारो तरफ़ पचास मील के अन्दर अन्दर की आबादी क़रीब ८५ फ़ी सदी हमेशा हिन्दू रही.

जिन्हें हम औरंगज़ेब की ग़लतियां मानते हैं, उनमें सबसे बड़ी ग़लती यह थी—आज कल की हकूमतों और आज कल के राजकाज के ऊंचे से ऊंचे असूलों में से एक यह है कि राज का किसी ख़ास धर्म, सम्प्रदाय या किसी मज़हब के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिये ताकि राज के अन्दर सब तरह के विचारों, मानताओं और अलग अलग रीति रिवाजों, पूजा बन्दगी के अलग अलग तरीक़ों के लिये पूरी आज़ादी हो और सब धर्मों और मज़हबों के आदमी उस राज को एक बराबर अपना राज समझ सकें. आज कल का कोई देश, जिसमें यह आज़ादी न हो, सभ्य कहलाने का हक़दार नहीं हो सकता. सम्राट अकबर ने इस सचाई को आज से लगभग चार सौ बरस पहले समझ लिया था. इस देश की पुरानी धार्मिक परम्परा और यहां अनेक मत मतान्तरों की मौजूदगी ने अकबर को इस असूल के समझने में बहुत मदद दी. कबीर साहब को लोप

हुए अभी थोड़ी ही दिन बीते थे. कबीर के उपदेश सैकड़ों ज़बानों और हज़ारों पर इस मुल्क के कोने कोने में गूंज रहे थे. कबीर को इस बारे में अकबर का मानसिक पिता कहना बेजा न होगा. कबीर ने जो मज़हब के मैदान में करना चाहा, अकबर ने उसीकी कोशिश राजकाज के मैदान में की. अबुल फ़ज़ल और और फ़ैज़ी जैसे विद्वान सूफ़ी मनश सलाहकार भी अकबर के दरबार में मौजूद थे. आज की हकूमतें जो राज या हकूमत नाम की संस्था के बारे में करना चाहती है, अकबर ने वही बात राजा के यानी खुद अपने निजी जीवन में ढाल कर दिखाने की महान कोशिश की. उसके 'इबादतख़ाने' में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध, यहूदी, शिया, सुन्नी, द्वैतवादी और अद्वैतवादी सब तरह के विद्वानों का जमघट रहता था और प्रेम के साथ सब तरह के मत मतांतरों पर चरचे होते थे. दरबार के अन्दर हिन्दू और मुसलमान त्यौहार एक से जोश के साथ मनाए जाते थे. दशहरे पर बादशाह के हाथी घोड़े सजाये जाते थे. उनकी पूजा होती और बादशाह का जलूस निकलता था. दिवाली पर सारे महल और क़िले में रोशनी होती थी, यहां तक कि महल के अन्दर जुआ भी खेला जाता था. सलूनों के दिन बादशाह की धरम की हिन्दू बहनें बादशाह की कलाई पर राखी बांधती थीं. हिन्दू रिवाज के मुताबिक़ जगह जगह से डाक से भी राखियां आती थीं. महल में होली खेली जाती थी. इसी तरह और भी त्यौहार मनाए जाते थे. राजपूत रानियां दिल्ली और आगरे के क़िलों के अन्दर अपने महलों में हिन्दू तरीक़े से अपनी देवी देवताओं की पूजा करती थीं. सच यह है कि बहैसियत बादशाह के अकबर अपने जीवन में न हिन्दू था न मुसलमान, या यों कहिये कि वह दोनों था. नतीजा यह हुआ कि जब कि थोड़े से तंगनज़र मुल्लाओं ने काफिर, गरदाना और कुछ वैसे ही तंगदिल हिन्दुओं ने उसे मीठी छुरी समझा, लाखों हिन्दू और मुसलमान आम जनता ने उसे सच्चा प्रजापालक और आदर्श सम्राट माना. "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" की उस ज़माने की मशहूर कहावत आम हिन्दू जनता की ज़बान पर थी और उनके दिलों की हालत को ज़ाहिर करती थी. रोज़ सुबह 'झरोखा

दर्शन' पर भीड़ लग जाती थी. लाखों आदमी बिना दिल्लीश्वर का दर्शन किये भोजन न करते थे. हिन्दू मुसलमान और सबके साथ हर मामले में बराबर का इन्साफ़ होता था. प्रजा की ख़ुशहाली दुनिया भर में कहीं और अपनी मिसाल न रखती थी.

दिल्ली दरबार की यह उदारता और रवादारी जहांगीर और शाहजहां के वक़्तों में क़रीब क़रीब ज्यूं की त्यूं क़ायम रही. शाहजहां के बाद उस का बड़ा बेटा दारा ख़ुद उपनिषदों का पंडित था और अपने परदादा अकबर के पैरों की निशानी पर चलता था. औरंगज़ेब दारा की जगह ख़ुद तख़्त पर बैठना चाहता था. हिन्दू जनता क़रीब क़रीब सब दारा की तरफ़दार थी. मुसलमानों में भी सरमद की तरह मेल चाहने वाले दारा की तरफ़ थे. इन सब ताक़तों के ख़िलाफ़ औरंगज़ेब को सिवा इसके कोई चारा न था कि तंगनज़र कठमुल्लाई मुस्लिम ताक़तों को अपनी तरफ़ करे. आज ३०० बरस के बाद यह तय करना बहुत मुश्किल है कि औरंगज़ेब में ख़ुद अपनी कट्टरता ज़ियादा थी, या राजकाजी ज़रूरत ने उसे एक गिरोह को ख़ुशरखने पर और एक ख़ास चाल चलने ने पर मजबूर किया था. यह भी सच है कि आमतौर पर औरंगज़ेब ख़ुद बहुत ही परहेज़गार, संयमी और सख़्त ज़िन्दगी बसर करने वाला था. आमतौर पर वह हिन्दू और मुसलमानों के साथ बराबर का इन्साफ़ भी करता था या कम से कम करने की कोशिश करता था, वह प्रजापालक था. तिजारत और करीगरी की जितनी तरक़्क़ी हिन्दुस्तान ने उसके ज़माने में की और दूध, घी, चांदी, सोने की जो रेलपेल उस ज़माने में इस मुल्क में दिखाई देती थी, उसकी मिसाल दुनिया के किसी दूसरे देश में तो थी ही नहीं, पर हिन्दुस्तान के अन्दर भी उसकी मिसाल ढूंढने के लिये हमें पौने दो हज़ार बरस पीछे मौर्य ख़ानदान के इतिहास पर जाना पड़ता है.

इस सबके होते हुए भी औरंगज़ेब अकबर की उदार नीति से कोसों दूर हट गया था. वह कट्टर और अपनी निगाहों में पक्का मुसलमान था. इसी हैसियत से उसने रहना और बरतना शुरू किया. महल के

अन्दर हिन्दू त्यौहारों का मनाया जाना बन्द हो गया. मुसलमान बादशाह का दशहरे पर जलूस में निकलना, राखी बंधवाना या दिवाली पर रोशनी करना उसे इसलाम के खिलाफ़ दिखाई दिया. नतीजा जो होना था वही हुआ. औरंगज़ेब की इसी तरह की छोटी मोटी ग़लतियों ने, उसकी इस बदले हुए मज़हबी कट्टरता ने, दिल्ली दरबार के इस बदले हुए रंग के साथ मिलकर, हिन्दुस्तान भर के अन्दर हिन्दुओं को यह महसूस करा दिया कि अकबर के दिन गए और अब उन पर एक विधर्मी का राज है. चारों तरफ़ बगावतें खड़ी हो गईं. महज़ अपनी ताक़त के बल किसी तरह औरंगज़ेब ने ५० बरस तक इन बग़ावतों को दबाए रखा. औरंगज़ेब के मरते ही सलतनत के टुकड़े टुकड़े होने लगे.

हमने मुग़लराज और उस में भी ख़ासकर औरंगज़ेब का इतना ज़िक्र इसलिये किया है, क्योंकि हिन्दुस्तान के सारे इतिहास में शायद किसी बादशाह के बारे में भी इतनी ग़लत कहानियां चालू नहीं हैं, जितनी औरंगज़ेब के. अगर हम दूसरे बादशाहों के इतिहास को देखें, तो भी कम या ज़ियादा यही हाल मिलेगा. अगर हम औरंगज़ेब और शाहजहां, अकबर और शेरशाह इस देश के सब मुसलमान बादशाहों पर शुरू से आखिर तक एक व्यापक निगाह डालें और बुराइयों और भलाइयों दोनों को ईमानदारी से देखें तो किसी हिन्दू या मुसलमान को अपने देश के मुस्लिम ज़माने के इतिहास पर शरमाने की ज़रूरत नहीं है.

## औरंगज़ेब के बाद

औरंगज़ेब के मरने के बाद दिल्ली दरबार के समझदार राजकाजियों ने फिर यह महसूस कर लिया कि दरबार का रंग बदलने में ग़लती हुई. इस ग़लती को फिर से ठीक करने की कोशिशें भी हुईं. बाद के कई सम्राट काफ़ी उदार थे. दशहरा और दिवाली फिर से दरबार के अन्दर मनाए जाने लगे. आखिरी सम्राट बहादुरशाह, जो सन सत्तावन की जंगे आज़ादी का

सबसे बड़ा नेता था, सूफ़ी मनश आदमी था और अपनी सारी हिन्दू मुस्लिम प्रजा को एक निगाह से देखता था. बहुत मुमकिन था कि मुल्क फिर से औरंगज़ेब की ग़लती का काट करके अपने को ठीक रास्ते पर ले आता और अपनी आज़ादी को बचा सकता. पर ठीक उसी नाज़ुक वक़्त में इस मुल्क में अंगरेज़ों के क़दम बढ़ने लगे. १७०७ में औरंगज़ेब की आंख बन्द हुई और १७५७ में प्लासी की लड़ाई हुई. ठीक उस नाज़ुक वक़्त में ग़ैरों ने आकर हिन्दू और मुसलमानों दोनों को अलग अलग समझाना शुरू किया—"अब तुम अपने अपने लिये फ़िक्र न करो, तुम दोनों में हम अमन क़ायम रख लेंगे." उसके बाद के दो सौ बरस के इतिहास में और बारी बारी एक एक को घटा बढ़ा कर फूट के बीज को बोने की बाज़ाब्ता कोशिशों में जाने की यह जगह नहीं है. इस मुल्क के सारे इतिहास में बहुत सी फ़ैसलाकुन लड़ाइयां गिनी जाती हैं. हमारी राय में हमारे देश की सबसे फ़ैसलाकुन लड़ाई सन १६२६ ई० की सामूगढ़ की लड़ाई थी जिसमें औरंगज़ेब ने दारा को शिकस्त दी और जिस लड़ाई ने अगले तीन सौ बरस के लिये मुल्क की क़िस्मत का फ़ैसला कर दिया.

## आशा की किरनें

यह ३०० बरस अब पूरे होने आ रहे हैं. जिस अंधियारी में से इस समय हम निकल रहे हैं वह, भगवान ने चाहा तो, सूरज निकलने से ठीक पहले की अंधियारी साबित होगी. इसी अंधियारी के अन्दर आशा की किरनें आसमान पर दिखाई दे रही हैं. हमें यक़ीन है कि यह अंधियारी छटेगी, इसी कड़वे तजरबे से हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के दिलों और दिमाग़ों से नासमझियों के जाले हटेंगे और मेल मिलाप का सूरज जल्दी ही फिर से इस ज़मीन पर पूरे आबताब के साथ अपनी किरनें फेंकता हुआ दिखाई देगा.

## दुनिया के इतिहास पर एक नज़र

अगर हम सारी दुनिया के इतिहास को एक करके देखें तो अलग अलग ज़मानों और अलग अलग युगों की अपनी अपनी अच्छाइयां और

अपनी अपनी बुराइयां, अपनी अपनी दवाएं और अपनी अपनी बीमारियां होतीं हैं. लोगों और क़ौमों के कामों को परखने के लिये और उन पर राय क़ायम करने के लिये कसौटियां बदलती रहती हैं. १३ वीं सदी के किसी आदमी या किसी चीज़ को २० वीं सदी की कसौटी पर कसकर देखना कभी कभी बड़ी बेइन्साफ़ी हो जाती है और उससे हम ग़लत नतीजे निकाल बैठते हैं. ईसा की १५वीं, १६ वीं, १७ वीं और १८ वीं सदी मज़हब के मामले में एक ख़ास तंग नज़री की सदियां थीं. जगह जगह दुनिया के हाकिम उन दिनों यह समझते थे कि राजा को यह हक़ है कि जो धर्म उसका हो वही धर्म प्रजा से मनवाए. इसी ग़लत असूल की बिना पर उन चार सौ बरस के अन्दर योरोप के एक मुल्क में जहां जहां कोई प्रोटेस्टैन्ट बादशाह था वहां लाखों कैथोलिक जिन्दा जला दिये गए या तलवार के घाट उतार दिये, गए. और जहां कैथोलिक बादशाह थे. वहां लाखों प्रोटेस्टैन्ट इसी तरह ख़तम कर दिये गए. मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है. उस अंधेरे युग में—और सचमुच योरोप के इतिहास में वह अंधेरा युग "डार्क ऐजेज़" नाम से पुकारा जाता है, योरोप के ज़िले के ज़िले और सूबे के सूबे इसी मज़हबी ज़ुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए थे. यह वह समय था जब कि हिन्दुस्तान के अलग अलग सूबे हरे भरे बाग़ों की तरह लहलहा रहे थे और एक एक सूबे, एक एक शहर. एक एक गांव और एक एक गली में हिन्दू और मुसलमान मिलकर भाई भाई की तरह रह रहे थे. जो कटाकटी सदियां योरोप के कैथोलिकों और प्रोटेस्टैन्टों में रही ठीक वही उन दिनों जापान में ईसाइयों और बौद्धों में देखने को मिलती थी. कम या ज़ियादा यही हालत चीन और दूसरे मुल्कों में भी थी. हिन्दुस्तान के कुछ मुसलमान बादशाहों ने भी इसी सिलसिले में थोड़ी बहुत ग़लतियां कीं. डी० ए० वी० कालेज लाहौर के हिस्टरी के प्रोफ़ेसर पं० श्रीराम शर्मा ने अपनी किताब 'दी रिलिजस पालिसी आफ़ दी मुग़लस इम्पेररस' में इस मुल्क के मुग़ल बादशाहों की मज़हबी पालिसी को तफ़सील के साथ बयान करते हुए उस ज़माने के योरोप के बादशाहों का मुक़ाबला करते हुए दर्शाया है कि हमारे यहां के मुसलमान बादशाह उस

ज़माने के योरोप के बादशाहों मुक़ाबिले में कहीं ज़ियादा उदार, रवादार और प्रजापालक थे. उन्होंने दिखाया है कि मज़हब के नाम पर जिस तरह के ज़ुल्म उन दिनों योरोप के एक एक मुल्क में हुए, हिन्दुस्तान की सर ज़मीन में कभी भी देखने में नहीं आये. पं० श्री राम शर्मा लिखते हैं कि :—

"यह याद रखना भी ज़रूरी है कि मुग़ल सम्राटों ने अपनी रिआया के कारबार सम्बन्धी एक बहुत बड़े मैदान में कोई दख़ल नहीं दिया. योरोप में यह वह ज़माना था जब राजकाजी अधिकारी—चाहे ख़ुद हकूमत करने वाले बादशाह हों और चाहे उन मुल्कों के बादशाह हों जहां पारलीमेन्टें क़ायम हो चुकी थीं—अपनी रिआया को यहां तक हुकुम देने में लगे हुए थे कि रियाआ किस किस तरह के धार्मिक विश्वासों को माने. मिसाल के तौर पर जो लोग एडवर्ड छटे की तरफ़ से हकूमत करते थे उन्होंने कहा कि अंगरेज़ क़ौम का मज़हब प्रोटेस्टेन्ट होना चाहिये और इंगलिस्तान प्रोटेस्टेन्ट हो गया. उस के बाद मेरी तख़्त पर आई और जैसे कोई जादू के ज़ोर से इंगलिस्तान फिर रोमन कैथोलिक हो गया. एलीज़ाबेथ के तख़्त पर बैठने के साथ साथ पहिया फिर घूम गया और उस खींचातानी में से निकलते ही सारा इंगलिस्तान ऐंगलीकन ( प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय की एक शाख़ ) हो गया. आजकल हम इस बात के कितने ही आदी क्यों न हो गए हों कि राज अपनी रिआया के मज़हब को खुला छोड़ देता है—और अब भी हिटलर ने हमें इस बात की इजाज़त नहीं दी कि हम इस बात को एक ज़रूरी असूल मान बैठें—सोलहवीं और सतरहवीं सदी की सरकारें अपनी रिआया के धार्मिक विश्वास में दख़ल देना बहुत कुछ अपना हक़ समझती थीं. इसलिये मुग़लों ने अपनी रिआया के धार्मिक विश्वासों में कोई दख़ल न देकर सब से अलग अपनी मिसाल क़ायम की. उन्हों ने कोई एक्ट आफ़ सुप्रीमेसी जैसे क़ानून पास नहीं किये जिन से किसी एक मज़हब वालों को राजकाज में दूसरे मज़हब वालों पर तरजीह दी जावे. उन्हों ने जहां तक आबादी के बहुत ज़बरस्त बहुमत के धार्मिक विश्वासों का सम्बन्ध था कोई 'उनतालीस बातें' मानना किसी के लिये ज़रूरी नहीं

ठहराया. मुसलमानों तक के लिये उन्हों ने ज़ियादा से ज़ियादा यह किया कि मुर्तिदों को सज़ा दी और आम सदाचार की कुछ बातों में कुछ ऊपरी नियमों के पालने पर ज़ोर दिया."— The Religious Policy of the Mughal Emperors by Sri Ram Sharma, p. 200-201)

इतिहास का कोई भी इन्साफ़ पसन्द पढ़ने वाला इसी नतीजे पर पहुँचे बिना नहीं रह सकता. अगर आज यरोप के किसी भी देश में कैथोलिक संगठन या प्रोटेस्टैन्ट तंजीम, कैथोलिक राज या प्रोटेस्टैन्ट हकूमत की ज़रूरत नहीं है और एक एक मुल्क में वही कैथोलिक और प्रोटेस्टैन्ट जो सदियों एक दूसरे के जानी दुश्मन थे आज दूध और शक्कर की तरह मिलकर रह रहे हैं और अपने अपने देश को बढ़ा और चमका रहे हैं, तो उनसे कहीं ज़ियादा पुरानी और ऊची सभ्यता वाले हिन्दुस्तान में प्रेम और मेल मिलाप की ऐसी ही बल्कि इससे भी बढ़कर राहें क्यों न खुल सकें.

## हमारा अगला रास्ता

हमारा आगे का रास्ता साफ़ है. हमें ग़ैरों की चालों को निकम्मा करना है. हमें अपनी फ़िरक़ेवाराना तंग नज़रियों से ऊपर उठना है. सबके लिये पूजा बन्दगी के तरीक़ों की पूरी आज़ादी को क़ायम रखते हुए भी हमें दीन धर्म के उन बुनियादी असूलों को समझना है जो सब इनसानों के लिये एक बराबर हैं. इन असूलों को ज़ियादा और रीति रिवाजों की ऊपरी अलामतों को कम अहमियत देनी है. दीन या धरम के नाम पर पाप का बाज़ार हमें ख़त्म करना है. उपनिषद, गीता, कबीर, नानक और सूफ़ियों की बताई राह से हम भटक गए. हमें उसी राह पर लौट कर आना है. इस तरह एक दूसरे पर भरोसा करते हुए, एक दूसरे से प्रेम करते हुए और एक दूसरे की सेवा करते हुए मिलकर अपने इस प्यारे मुल्क को बढ़ाना और चमकाना है. हमें उस जातपात और छुआछूत का ख़ात्मा करना है जो हमारे देश की

सबसे बड़ी बीमारी है. धीरे धीरे हमें उस मानव धर्म, उस मज़हबे इन्सानियत, उस प्रेम धर्म, उस मज़हबे इश्क़ की तरफ़ जाना है जो हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों का इत्र है और जिसकी सारी दुनिया इस वक़्त बाट जोह रही है. यही एक रास्ता सलामती और बहबूदी का रास्ता है. बाक़ी सब तंग गलियां बरबादी की तरफ़ ले जाने वाली हैं. हमें पूरा यक़ीन है कि हाल के हमारे कड़वे तजरबे फ़ज़ूल नहीं जा सकते, हिन्दुस्तान की हिन्दू और मुसलमान जनता इन ही से अपनी असली हालत और अपनी बीमारी के असली कारनों को समझ कर बहुत जल्दी तेज़ी के साथ आगे बढ़ेगी और मुल्क के सब दुखों और रोगों को दूर करके उसे सच्ची तन्दुरुस्ती, सच्ची ख़ुशहाली और सच्ची तरक़्क़ी की तरफ़ ले चलेगी. यही एक सबक़ है जो हम महात्मा गांधी की ज़िन्दगी और उनकी क़ुरबानी से सीख सकते हैं. इतिहास में इस तरह की क़ुरबानियाँ कभी भी फ़ज़ूल नहीं गई. हमें अपने मुल्क के हिन्दू मुसलमानों पर भरोसा है. हमें भरोसा है कि यह ज़बरदस्त क़ुरबानी ही हमारे दिलों को फिर से मिलाने, हमारी क़िस्मत को पलटने और हमारे भविष्य को चमकाने वाली साबित होगी.

हम इस छोटी सी पुस्तक को महात्मा गांधी की इन मशहूर लाइनों के साथ ख़तम करते हैं —

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम,<br>
सबको संमति दे भगवान.